CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2017 with Solution PDF-Set 2/1 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 6, 7, 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

किसी देश का लोक जागरूक हो इसके लिए उसका चिंतनशील, संवेदनशील, अनुभवी, शक्तिशाली और क्रियाशील होना आवश्यक है। ये सभी गुण तभी आते हैं, जब लोग समाज के सामने आने वाली समस्याओं पर सोचते हैं, विचारते हैं और समाधान के नए-नए उपाय खोजते हैं। यदि किसी लोकतंत्र के लोग अपनी-अपनी घरेलू या व्यावसायिक समस्याओं से अलग कुछ सोच ही न पाते हों तो वहाँ लोकतंत्र कभी सफल नहीं हो सकता। यदि भारतीय जन भारत में फैले आतंकवाद पर, भ्रष्टाचार पर, संस्कारों पर, दूरदर्शन के कार्यक्रमों पर, नए फैशन पर, नई बीमारियों पर या नई जीवन शैलियों पर कोई मत ही नहीं रखते तो वे अपना तंत्र कैसे स्थापित करेंगे? भारत का समाज आज लिंग-भेद, भ्रष्टाचार, आतंकवाद जैसे मुद्दों पर अनेक समस्याएँ झेल रहा है। इन पर लोकमत जानने और बनाने का काम मीडिया के हाथों में है।

प्रश्न यह है कि मीडिया के विविध रूप भारत के लोकमानस को शिक्षित, संस्कारित और जाग्रत करने के लिए क्या कर रहे हैं? मीडिया का एक काम है – जनता को अधुनातन जानकारियों से युक्त बनाना। इस काम में हमारे अनेक निजी तथा सरकारी चैनल प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। वे लोकमन को छूती हुई सामान्य से लेकर नई घटनाओं को हमारे सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। परंतु कुछ समाचार-पत्र और चैनल जानबूझ कर सनसनी फैलाने वाली सूचनाओं द्वारा जनता को क्षुब्ध, आतंकित या भयभीत कर रहे हैं। उन पर श्लीलता-अश्लीलता तथा गोपनीयता की सभी सीमाओं को लाँघने का भी आरोप लगता रहता है। इस पर संयम रखना स्वयं मीडिया-कर्मियों का दायित्व है। कभी-कभी वे ऐसी सामग्री प्रदर्शित करते हैं जो शत्रुदेश के लिए हितकर हो सकती है या कभी जातीय विद्वेष भड़क सकता है। ऐसी भूमिका देश हित में नहीं हो सकती इसलिए उससे बचना चाहिए।

मीडिया की सर्वाधिक प्रभावी भूमिका विभिन्न चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कार या सर्वेक्षणों के माध्यम से पूरी होती है। जब आतंकवाद, भ्रष्टाचार. विदेश नीति, परमाणु-बिजली, अर्थव्यवस्था जैसे प्रबल मुद्दों पर जनता और विशेषज्ञ अपनी राय देते हैं तो जनता का भी 'मन' जाग्रत होता है। यही लोक-इच्छा लोकतंत्र को मज़बूत करती है। [15 अंक]

1(क). गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक पूरे गद्यांश के केंद्रीय विषय को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- यहाँ लोक-जागरूकता, जनमत और लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका मुख्य विषय हैं।

चरण 1: केंद्रीय विचार पहचानिए गद्यांश में पहले जागरूक जनता को सफल लोकतंत्र की आवश्यकता बताया गया है। इसके बाद जनमत बनाने और जनता तक जानकारी पहुँचाने में मीडिया की भूमिका समझाई गई है।

चरण 2: शीर्षक निर्धारित कीजिए अंतिम अनुच्छेद भी बताता है कि चर्चाओं और विशेषज्ञों की राय से जनमानस जाग्रत होता है। इसलिए शीर्षक में मीडिया और लोकतंत्र दोनों का संबंध आना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है – लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को पकड़िए, केवल किसी एक उदाहरण को नहीं।

1(ख). लोक की जागरूकता से क्या तात्पर्य है? इसके लिए क्या आवश्यक है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोक की जागरूकता का संबंध सामाजिक समस्याओं की समझ और उनके समाधान में रुचि से है।
- उत्तर में जागरूकता का अर्थ तथा उसके लिए आवश्यक गुण दोनों लिखने हैं।

चरण 1: जागरूकता का अर्थ समझिए लोक की जागरूकता से तात्पर्य है कि जनता अपने समाज और देश की समस्याओं को समझे, उन पर विचार करे तथा उनके संबंध में अपना मत बनाए। केवल अपने घर या व्यवसाय की चिंता तक सीमित रहना जागरूकता नहीं है। गद्यांश में आतंकवाद, भ्रष्टाचार और बदलती जीवन-शैलियों पर मत रखने की बात इसी अर्थ में कही गई है।

चरण 2: आवश्यक गुण और प्रयास लिखिए इसके लिए जनता का चिंतनशील, संवेदनशील, अनुभवी, शक्तिशाली और क्रियाशील होना आवश्यक है। ये गुण तभी आते हैं जब लोग समाज की समस्याओं पर सोचते-विचारते हैं और उनके समाधान के नए-नए उपाय खोजते हैं। इस प्रकार जानकारी के साथ विचार और सक्रिय प्रयास भी आवश्यक हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लोक-जागरूकता सामाजिक समस्याओं की समझ, उन पर स्वतंत्र मत और समाधान की सक्रिय खोज है। इसके लिए चिंतनशीलता, संवेदनशीलता, अनुभव, शक्ति और क्रियाशीलता आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो स्पष्ट पक्ष रखिए – जागरूकता का अर्थ और उसे विकसित करने वाले गुण।

1(ग). लोकमत बनाने का मुख्य काम कौन करता है? कैसे? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश लोकमत जानने और बनाने की जिम्मेदारी मीडिया को देता है।
- माध्यमों की सूची के साथ यह स्पष्ट करना है कि उनसे जनता की समझ कैसे बनती है।

चरण 1: मुख्य संस्था पहचानिए लोकमत बनाने का मुख्य काम मीडिया करता है। गद्यांश में लिंग-भेद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसे मुद्दों के संदर्भ में स्पष्ट कहा गया है कि इन पर लोकमत जानने और बनाने का काम मीडिया के हाथों में है। इसलिए उत्तर का केंद्र समाचार-पत्रों और प्रसारण माध्यमों की सामाजिक भूमिका है।

चरण 2: कार्य करने की प्रक्रिया समझाइए मीडिया जनता को नई घटनाओं और अधुनातन जानकारियों से परिचित कराता है। वह चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कारों और सर्वेक्षणों में जनता तथा विशेषज्ञों की राय सामने लाता है। इससे लोगों को राष्ट्रीय-सामाजिक प्रश्नों पर विचार करने, विभिन्न दृष्टिकोण समझने और अपना मत बनाने का अवसर मिलता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोकमत बनाने का मुख्य काम मीडिया करता है। वह ताजा जानकारी और चर्चा, वाद-विवाद, साक्षात्कार तथा सर्वेक्षणों के माध्यम से जनता को विचार करने और राय बनाने में सहायता देता है।

त्वरित सुझाव: कौन के उत्तर में मीडिया और कैसे के उत्तर में उसके कार्यक्रम तथा उनका प्रभाव लिखिए।

1(घ). लोकतंत्र किसे कहते हैं? वह कब असफल हो जाता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में लोकतंत्र की सफलता को जागरूक लोक और लोक-इच्छा से जोड़ा गया है।
- परिभाषा के साथ असफलता की वह स्थिति लिखनी है जो प्रथम अनुच्छेद में दी गई है।

चरण 1: लोकतंत्र का आशय स्पष्ट कीजिए लोकतंत्र जनता का तंत्र है, जिसमें जनता की इच्छा और सहभागिता का महत्व होता है। गद्यांश का प्रश्न कि लोग अपना तंत्र कैसे स्थापित करेंगे और अंतिम कथन कि लोक-इच्छा लोकतंत्र को मजबूत करती है, इसी अर्थ को स्पष्ट करते हैं। जनता का मत इस व्यवस्था का आधार है।

चरण 2: असफलता की स्थिति बताइए जब लोग अपनी घरेलू अथवा व्यावसायिक समस्याओं से आगे कुछ सोच ही नहीं पाते और सामाजिक-राष्ट्रीय समस्याओं पर कोई मत नहीं रखते, तब लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता। आतंकवाद या भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं पर विचार और समाधान की खोज छोड़ देने से जागरूक लोकमत विकसित नहीं होता। इस निष्क्रियता से लोकतंत्र कमजोर पड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोकतंत्र जनता की इच्छा और सहभागिता पर आधारित शासन-व्यवस्था है। जब जनता निजी समस्याओं तक सीमित रहकर सार्वजनिक समस्याओं पर सोचना और मत बनाना छोड़ देती है, तो वह असफल हो जाता है।

त्वरित सुझाव: लोकतंत्र की परिभाषा के बाद असफलता का कारण गद्यांश की निजी चिंताओं वाली पंक्ति से जोड़िए।

1(ङ). मीडिया की अनुत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका कब दिखाई पड़ती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मीडिया का दायित्व जनता को जानकारी देकर जागरूक करना है।
- गद्यांश में सनसनी, मर्यादा-उल्लंघन और देशहित को हानि पहुँचाने वाली सामग्री की आलोचना है।

चरण 1: सनसनी और मर्यादा-उल्लंघन पहचानिए मीडिया की अनुत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका तब दिखाई पड़ती है जब वह जानबूझकर सनसनी फैलाने वाली सूचनाएँ देता है और जनता को क्षुब्ध, आतंकित या भयभीत करता है। श्लीलता तथा गोपनीयता की सीमाएँ लाँघना भी इसी भूमिका का रूप है। ऐसी प्रस्तुति लोगों की समझ बढ़ाने के बजाय उनमें भय और असंतोष बढ़ाती है।

चरण 2: सामाजिक और राष्ट्रीय हानि बताइए जब मीडिया ऐसी सामग्री प्रदर्शित करता है जो शत्रुदेश के लिए हितकर हो सकती है या जातीय विद्वेष भड़का सकती है, तब वह अपना दायित्व नहीं निभाता। गद्यांश के अनुसार ऐसी भूमिका देशहित में नहीं है। इसीलिए सामग्री के चयन और प्रस्तुति में संयम रखना स्वयं मीडिया-कर्मियों का दायित्व बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सनसनी फैलाकर जनता को भयभीत करना, श्लीलता और गोपनीयता की सीमाएँ लाँघना तथा शत्रुदेश को लाभ या जातीय विद्वेष को बढ़ावा देने वाली सामग्री दिखाना मीडिया की अनुत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल सनसनी का उल्लेख न करें; गोपनीयता, जातीय विद्वेष और देशहित के पक्ष भी जोड़ें।

1(च). मीडिया की भूमिका कैसे कार्यक्रमों से पूरी होती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अंतिम अनुच्छेद मीडिया की सर्वाधिक प्रभावी भूमिका के साधन बताता है।
- कार्यक्रमों का नाम और उनसे उत्पन्न जागरूक लोकमत, दोनों उत्तर के अंग हैं।

चरण 1: कार्यक्रमों के प्रकार लिखिए मीडिया की भूमिका विभिन्न चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कारों तथा सर्वेक्षणों जैसे कार्यक्रमों से पूरी होती है। गद्यांश इन्हीं माध्यमों को सर्वाधिक प्रभावी बताता है, क्योंकि इनमें किसी मुद्दे पर विचार और राय सीधे सामने आते हैं। इस प्रकार मीडिया केवल घटना का समाचार देने से आगे बढ़कर उस पर सोचने का अवसर भी देता है।

चरण 2: विषय और प्रभाव स्पष्ट कीजिए इन कार्यक्रमों में आतंकवाद, भ्रष्टाचार, विदेश नीति, परमाणु-बिजली और अर्थव्यवस्था जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जनता तथा विशेषज्ञ अपनी राय देते हैं। इन विचारों से जनता का मन जाग्रत होता है और उसे मुद्दों को समझने में सहायता मिलती है। यही जागरूक लोक-इच्छा लोकतंत्र को मजबूत करती है।

चरण 3: निष्कर्ष मीडिया की भूमिका राष्ट्रीय-सामाजिक मुद्दों पर आधारित चर्चा, वाद-विवाद, साक्षात्कार और सर्वेक्षण जैसे कार्यक्रमों से पूरी होती है। इनमें जनता और विशेषज्ञों की राय लोगों को जागरूक करके लोकतंत्र को मजबूत करती है।

त्वरित सुझाव: कार्यक्रमों की सूची के बाद जनता के मन के जागरण का परिणाम जोड़कर उत्तर पूरा कीजिए।

1(छ). आज भारत का समाज किन समस्याओं से जूझ रहा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उत्तर के लिए गद्यांश में दी गई सामाजिक समस्याओं की स्पष्ट सूची आधार है।
- अन्य उदाहरणों और सीधे उल्लिखित मुख्य समस्याओं में अंतर पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: स्पष्ट सूची पहचानिए गद्यांश में कहा गया है कि भारत का समाज आज लिंग-भेद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसे मुद्दों पर अनेक समस्याएँ झेल रहा है। अतः उत्तर में इन तीनों समस्याओं का उल्लेख आवश्यक है। लिंग-भेद सामाजिक असमानता से, भ्रष्टाचार सार्वजनिक जीवन की विकृति से और आतंकवाद सामाजिक सुरक्षा के संकट से संबंधित समस्या है।

चरण 2: प्रसंग के साथ उत्तर जोड़िए लेखक इन समस्याओं का उल्लेख यह बताने के लिए करता है कि जनता को निजी चिंताओं से आगे बढ़कर सामाजिक प्रश्नों पर भी विचार करना चाहिए। ऐसे मुद्दों पर लोकमत जानने और बनाने का काम मीडिया का है। नए फैशन और दूरदर्शन के कार्यक्रम भी गद्यांश में विचार के उदाहरण हैं, पर मुख्य सामाजिक समस्याओं की स्पष्ट सूची लिंग-भेद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद की है।

चरण 3: निष्कर्ष आज भारत का समाज मुख्यतः लिंग-भेद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। इन मुद्दों पर जागरूक लोकमत का निर्माण आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: समस्याओं के नाम सीधे उस वाक्य से चुनिए जिसमें भारत के समाज के समस्याएँ झेलने की बात है।

1(ज). लोकतंत्र की स्थापना और विकास में मीडिया का क्या महत्त्व है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकतंत्र की सफलता के लिए जनता का जागरूक होना और सामाजिक समस्याओं पर स्वतंत्र मत रखना आवश्यक है।
- मीडिया नवीन जानकारी देकर तथा सार्वजनिक चर्चा द्वारा लोकमत बनाने में सहायता करता है।

चरण 1: जानकारी और जागरूकता की भूमिका पहचानें गद्यांश के अनुसार मीडिया जनता को अधुनातन जानकारियों से युक्त करता है। समाचारों से लोग अपने घर और व्यवसाय के बाहर की सामाजिक समस्याओं को जानते हैं। आतंकवाद, भ्रष्टाचार और अन्य सार्वजनिक मुद्दों को समझकर वे उन पर विचार कर सकते हैं। इस प्रकार मीडिया जागरूक नागरिक तैयार करने में सहायता करता है, जो लोकतंत्र की स्थापना और सफलता का आधार हैं।

चरण 2: लोकमत और लोक-इच्छा का संबंध स्पष्ट करें चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कारों और सर्वेक्षणों में जनता तथा विशेषज्ञ अपने विचार रखते हैं। इनसे जनता का मन जाग्रत होता है और विभिन्न मुद्दों पर लोकमत बनता है। यही लोक-इच्छा लोकतंत्र को मजबूत बनाती है। इसलिए मीडिया को जिम्मेदारी से सूचना देनी चाहिए; भय, सनसनी या विद्वेष फैलाने से उसकी यह उपयोगी भूमिका प्रभावित होती है।

चरण 3: निष्कर्ष मीडिया जनता को जानकारी देकर जागरूक बनाता है तथा विचार-विमर्श से लोकमत और लोक-इच्छा विकसित करता है। इस प्रकार वह लोकतंत्र की स्थापना, मजबूती और विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मीडिया के दोनों कार्य जोड़ें: नवीन जानकारी देना और चर्चा द्वारा लोकमत बनाना।

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

देश नहीं होता है केवल
सीमाओं से घिरा मकान
देश नहीं होता है कोई
सजी हुई ऊँची दूकान
देश नहीं क्लब जिसमें बैठे
करते रहें सदा हम मौज
देश नहीं होता बंदूकें
देश नहीं होता है फौज
जहाँ प्रेम के दीपक जलते
जहाँ इरादे नहीं बदलते
हर दिल में अरमान मचलते
सज्जन सीना ताने चलते,
वही हुआ करता है देश।
पहले हम खुद को पहचानें
फिर पहचानें अपना देश
एक दमकता सत्य बनेगा,
नही रहेगा सपना देश।।

[5 अंक]

2(क). कवि के विचार में किन बातों को देश नहीं माना जा सकता? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि देश को केवल भौगोलिक सीमा या भौतिक साधनों तक सीमित नहीं मानता।
- उत्तर में काव्यांश में नकारे गए सभी रूपों का उल्लेख करना है।

चरण 1: भौतिक रूपों को पहचानें कवि कहता है कि सीमाओं से घिरा मकान और सजी हुई ऊँची दुकान मात्र देश नहीं हैं। इससे स्पष्ट है कि केवल भूभाग या बाहरी सजावट से देश की पूरी पहचान नहीं बनती।

चरण 2: मनोरंजन और सैन्य साधनों का उल्लेख करें देश केवल मौज करने का क्लब भी नहीं है। केवल बंदूकें और फौज होने से भी देश की सार्थक अवधारणा पूरी नहीं होती। कवि इन साधनों से आगे नागरिकों के प्रेम और दृढ़ संकल्प को आवश्यक मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के अनुसार देश केवल सीमाओं से घिरा मकान, सजी हुई ऊँची दुकान, मौज करने का क्लब, बंदूकें या फौज नहीं है।

त्वरित सुझाव: कविता में बार-बार आए "देश नहीं के बाद के शब्द चुनकर उत्तर की पूरी सूची बनाइए।

2(ख). देश की पहचान क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि देश की पहचान नागरिकों के मानवीय गुणों में देखता है।
- काव्यांश की सकारात्मक पंक्तियाँ देश का वास्तविक स्वरूप बताती हैं।

चरण 1: प्रेम और संकल्प को पहचानें "जहाँ प्रेम के दीपक जलते से परस्पर प्रेम का भाव व्यक्त होता है। "जहाँ इरादे नहीं बदलते से

लोगों के दृढ़ संकल्प का संकेत मिलता है। ये देश की आंतरिक शक्ति हैं।

चरण 2: आकांक्षा और सज्जनता को जोड़ें हर हृदय में अरमानों का होना और सज्जनों का सीना तानकर चलना भी देश की पहचान है। इससे आशा तथा अच्छे लोगों के सम्मान का वातावरण सामने आता है। कवि ऐसे समाज को ही वास्तविक देश मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष आपसी प्रेम, दृढ़ संकल्प, हृदय में उमंग और आकांक्षाएँ तथा सज्जनों का सम्मानपूर्वक निर्भय होकर चलना देश की पहचान है।

त्वरित सुझाव: देश की पहचान के लिए "जहाँ से शुरू होने वाली पंक्तियाँ और सज्जनों वाली पंक्ति साथ पढ़िए।

2(ग). आशय स्पष्ट कीजिए "जहाँ प्रेम के दीपक जलते, जहाँ इरादे नहीं बदलते"। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- "प्रेम के दीपक आपसी स्नेह और सद्भाव का प्रतीक हैं।
- इरादों का न बदलना संकल्प की दृढ़ता और लक्ष्य के प्रति निष्ठा बताता है।

चरण 1: प्रेम के दीपक का भाव समझें जिस प्रकार दीपक प्रकाश देता है, उसी प्रकार आपसी प्रेम समाज में सद्भाव फैलाता है। पहली पंक्ति ऐसे देश की कल्पना करती है जहाँ लोग एक-दूसरे के प्रति स्नेह रखते हैं। यहाँ वास्तविक दीपक जलाने की बात मुख्य नहीं है।

चरण 2: दृढ़ इरादे का अर्थ स्पष्ट करें दूसरी पंक्ति का आशय है कि लोग अपने उचित उद्देश्यों के प्रति अडिग रहें। उनके संकल्प बार-बार न बदलें। प्रेम और संकल्प का यह मेल देश को सार्थक पहचान देता है।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों का आशय है कि देशवासियों में आपसी प्रेम और सद्भाव हो तथा वे अपने उद्देश्यों और संकल्पों के प्रति दृढ़ रहें।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का सीधा अर्थ लिखने के बाद उसे देशवासियों के व्यवहार से जोड़कर आशय स्पष्ट कीजिए।

2(घ). बंदूकों और फौजों का होना कब सार्थक है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में केवल बंदूकों और फौज को देश नहीं माना गया है।
- सैन्य साधनों की सार्थकता को कविता के प्रेम, संकल्प और सज्जनता के आदर्श से जोड़ना है।

चरण 1: केवल साधनों की सीमा समझें कवि की पंक्ति "देश नहीं होता बंदूकें बताती है कि सैन्य साधनों का होना अपने-आप में पर्याप्त नहीं है। देश की वास्तविक पहचान उसके लोगों के प्रेम, अडिग इरादों और सज्जनों के सम्मान में है।

चरण 2: रक्षा के उद्देश्य से संबंध जोड़ें इस भाव के अनुसार बंदूकें और फौज तब सार्थक हैं जब वे ऐसे देश और उसके लोगों की रक्षा करें। उनका उद्देश्य देशवासियों को सुरक्षित रखना और उन्हें निर्भय जीवन देना हो, तभी वे देश के मानवीय आदर्शों के सहायक बनते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष बंदूकों और फौजों का होना तब सार्थक है जब वे देश तथा देशवासियों की रक्षा करें और प्रेम, दृढ़ संकल्प व सज्जनता से युक्त जीवन को सुरक्षित रखें।

त्वरित सुझाव: केवल "रक्षा करना न लिखें; उसे कविता में बताए प्रेम और निर्भय सज्जन जीवन से जोड़िए।

2(ङ). आपके विचार से खुद को पहचानना क्यों महत्त्वपूर्ण है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि पहले स्वयं को और फिर अपने देश को पहचानने की बात कहता है।
- आत्म-पहचान से व्यक्ति अपने गुणों, उद्देश्यों और दायित्वों को समझ सकता है।

चरण 1: खुद को पहचानने का अर्थ बताएँ मेरे विचार से खुद को पहचानने का अर्थ अपनी क्षमताओं, कमियों और संकल्पों को समझना है। इससे व्यक्ति अपने आचरण पर विचार कर सकता है और केवल दूसरों से अपेक्षा करने के बजाय अपनी भूमिका पहचान सकता है।

चरण 2: देश के आदर्श से संबंध स्पष्ट करें जब हम अपने भीतर प्रेम और दृढ़ निश्चय विकसित करते हैं, तब देश की उन्नति में योगदान दे सकते हैं। कविता की अंतिम पंक्तियों के अनुसार इसी से आदर्श देश केवल सपना न रहकर एक उज्ज्वल सत्य बन सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष खुद को पहचानना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें अपनी क्षमताओं और दायित्वों का बोध होता है। हम अपने आचरण को सुधारकर देश के आदर्श स्वरूप को वास्तविक बनाने में योगदान दे सकते हैं।

त्वरित सुझाव: "पहले हम खुद को पहचानें को अंतिम पंक्ति के सपना सच बनने के भाव से जोड़कर उत्तर लिखिए।

3(क). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : मैं और मेरा देश [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का क्रमबद्ध विकास प्रस्तावना, मुख्य विवेचन और उपसंहार के माध्यम से होता है।
- विचारों की स्पष्टता, अनुच्छेदों की संगति और सरल मानक हिंदी प्रभावी निबंध के प्रमुख आधार हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना निबंध में प्रथम पुरुष की आत्मीय शैली अपनाएँ। प्रस्तावना में देश से अपना संबंध, मध्य भाग में उसकी विविधता और नागरिक के कर्तव्य तथा अंत में अपने संकल्प को रखें। केवल प्रशंसा करने के स्थान पर देश की समस्याओं के समाधान में अपनी भूमिका भी स्पष्ट करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध मैं और मेरा देश

मेरा देश भारत मेरी पहचान का आधार है। उसकी मिट्टी, नदियों, पर्वतों, भाषाओं और लोकपरंपराओं से मेरा गहरा लगाव है। यहाँ जन्म लेकर मुझे ऐसी सभ्यता का उत्तराधिकार मिला है जो विविधताओं के बीच साथ रहने का संदेश देती है। मेरे लिए देशप्रेम केवल किसी अवसर पर नारा लगाना नहीं, बल्कि रोजमर्रा के जीवन में अपने दायित्व निभाना है।

भारत की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सांस्कृतिक विविधता है। अलग-अलग प्रदेशों में भोजन, पहनावा, भाषा और त्योहार बदल जाते हैं, फिर भी लोगों की आशाएँ और संवेदनाएँ एक-दूसरे से जुड़ी रहती हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक धर्मों और क्षेत्रों के लोगों ने मिलकर त्याग किया। उनका संघर्ष मुझे सिखाता है कि व्यक्तिगत सुविधा से ऊपर उठकर समाज के हित के लिए काम करना चाहिए।

एक विद्यार्थी के रूप में मेरा पहला कर्तव्य मन लगाकर पढ़ना और अपने चरित्र को सुदृढ़ बनाना है। शिक्षा मुझे केवल रोजगार के योग्य नहीं बनाती, बल्कि सही और गलत का विवेक भी देती है। परीक्षा में ईमानदारी, समय का पालन और दूसरों के विचारों का सम्मान अच्छे नागरिक बनने की शुरुआती सीढ़ियाँ हैं। सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और नियमों का पालन करना भी देशसेवा के ही रूप हैं।

मेरे देश के सामने गरीबी, अशिक्षा, भेदभाव और प्रदूषण जैसी चुनौतियाँ हैं। इन्हें देखकर निराश होने के बजाय मैं अपनी क्षमता के अनुसार योगदान देना चाहता हूँ। किसी जरूरतमंद बच्चे की पढ़ाई में मदद करना, पानी बचाना, स्वच्छता बनाए रखना और अफवाहें न फैलाना छोटे किंतु उपयोगी प्रयास हैं। मैं स्त्री-पुरुष समानता तथा सभी समुदायों के प्रति सम्मान को अपने व्यवहार में स्थान देना चाहता हूँ।

मुझे अपने देश की उपलब्धियों पर गर्व है, किंतु उससे प्रेम करने का अर्थ उसकी कमियों को छिपाना नहीं है। जागरूक नागरिक समस्याओं को समझता है और उनके समाधान में भाग लेता है। मेरा संकल्प है कि मैं ज्ञान, श्रम और ईमानदारी से ऐसा जीवन जिऊँ जिससे समाज का भला हो। देश मेरा गौरव है और उसके बेहतर भविष्य के निर्माण में योगदान देना मेरी जिम्मेदारी है।

चरण 3: निष्कर्ष निबंध में देश के प्रति आत्मीय लगाव और जागरूक नागरिक के दायित्वों का संतुलित चित्रण किया गया है।

त्वरित सुझाव: पहले विविधता, विद्यार्थी के कर्तव्य, सामाजिक चुनौतियाँ और अपना संकल्प लिखकर रूपरेखा बनाएँ; फिर प्रत्येक बिंदु का अलग अनुच्छेद विकसित करें।

3(ख). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : महाशक्ति के रूप में उभरता भारत [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का क्रमबद्ध विकास प्रस्तावना, मुख्य विवेचन और उपसंहार के माध्यम से होता है।
- विचारों की स्पष्टता, अनुच्छेदों की संगति और सरल मानक हिंदी प्रभावी निबंध के प्रमुख आधार हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना प्रस्तावना में महाशक्ति का व्यापक अर्थ स्पष्ट करें। मुख्य भाग में अर्थव्यवस्था, विज्ञान, युवा शक्ति, संस्कृति और लोकतंत्र की संभावनाएँ रखें। फिर गरीबी, असमानता और पर्यावरण जैसी चुनौतियों का उल्लेख करके समाधान सहित संतुलित निष्कर्ष दें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श निबंध महाशक्ति के रूप में उभरता भारत

किसी राष्ट्र की शक्ति का आकलन केवल उसकी सेना या संपत्ति से नहीं किया जा सकता। वैज्ञानिक प्रगति, जनकल्याण, सांस्कृतिक प्रभाव और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की क्षमता भी उसके महत्वपूर्ण आधार हैं। भारत इन क्षेत्रों में अपनी संभावनाओं के कारण विश्व में एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभर रहा है। उसकी वास्तविक सफलता इसी में होगी कि विकास का लाभ प्रत्येक नागरिक तक पहुँचे।

भारत की आर्थिक शक्ति का आधार उसका विशाल बाजार, कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र हैं। सूचना प्रौद्योगिकी तथा संचार सेवाओं में भारतीय प्रतिभा ने महत्वपूर्ण पहचान बनाई है। छोटे उद्योगों, उद्यमिता और कौशल प्रशिक्षण को बढ़ावा देकर रोजगार के नए अवसर विकसित किए जा सकते हैं। मजबूत अर्थव्यवस्था के लिए गाँवों की समृद्धि और किसानों की स्थिति में सुधार भी उतना ही आवश्यक है जितना नगरों का विकास।

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियाँ उसकी सामर्थ्य का परिचय देती हैं। अंतरिक्ष अनुसंधान, औषधि निर्माण और विभिन्न तकनीकी सेवाओं में देश ने अपनी क्षमता दिखाई है। वैज्ञानिक सोच तथा अनुसंधान को प्रोत्साहन मिलने से भारत अपनी समस्याओं के उपयोगी समाधान विकसित कर सकता है। ऊर्जा, स्वास्थ्य और शिक्षा में तकनीक का न्यायपूर्ण उपयोग राष्ट्रीय प्रगति को अधिक व्यापक बना सकता है।

देश की युवा आबादी उसकी बड़ी शक्ति है। अच्छी शिक्षा, स्वस्थ जीवन और उपयुक्त कौशल मिलने पर युवा उत्पादन, नवाचार और सामाजिक परिवर्तन में योगदान दे सकते हैं। भारतीय लोकतंत्र विविध विचारों को संवाद का अवसर देता है। हमारी साहित्यिक परंपराएँ, कला, योग और अनेक भाषाओं का सांस्कृतिक संसार भी भारत को विशिष्ट पहचान प्रदान करता है। विश्व के प्रति सहयोग और शांति का दृष्टिकोण इस पहचान को सुदृढ़ करता है।

फिर भी महाशक्ति बनने की राह में अनेक बाधाएँ हैं। गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सामाजिक भेदभाव और पर्यावरण का क्षरण प्रगति को कमजोर करते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुलभ स्वास्थ्य सेवा, पारदर्शी प्रशासन और स्त्री-पुरुष समानता पर निरंतर काम करना होगा। प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग भी आवश्यक है।

भारत का उज्ज्वल भविष्य केवल सरकार के प्रयासों पर निर्भर नहीं है। नागरिकों की ईमानदारी, परिश्रम और वैज्ञानिक दृष्टि भी निर्णायक हैं। जब आर्थिक उन्नति के साथ न्याय, मानवीय गरिमा और सामाजिक सद्भाव बढ़ेंगे, तभी भारत की शक्ति सार्थक होगी। ऐसी समावेशी प्रगति ही उसे विश्व में सम्मानपूर्ण और स्थायी स्थान दिला सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष भारत की महाशक्ति बनने की संभावना को आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आधारों तथा समावेशी विकास की आवश्यकता से जोड़ा गया है।

त्वरित सुझाव: उपलब्धियों के साथ चुनौतियों और उनके समाधान का एक अनुच्छेद अवश्य रखें; बिना प्रमाण के आँकड़े और अतिशयोक्तिपूर्ण दावे जोड़ने से बचें।

3(ग). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : मेरा प्रिय कवि [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तिपरक निबंध में प्रिय व्यक्तित्व का परिचय, उसकी विशेषताएँ और अपने चयन के कारण क्रमबद्ध रूप में दिए जाते हैं।
- कवि का मूल्यांकन उसकी रचनाओं, जीवन-दृष्टि और पाठक पर पड़ने वाले प्रभाव के आधार पर करना चाहिए।

चरण 1: विषय और रूपरेखा निश्चित करें इस विषय के लिए कबीर को प्रिय कवि चुना गया है। भूमिका में उनकी लोकप्रियता, मुख्य भाग में भक्ति, सामाजिक समानता, भाषा और पाखंड-विरोध तथा उपसंहार में उनकी आज की प्रासंगिकता रखेंगे। निबंध में जीवनी के अनावश्यक विवरण के स्थान पर कवि के प्रति अपने लगाव के कारण स्पष्ट करेंगे।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श निबंध मेरा प्रिय कवि

हिंदी साहित्य में अनेक कवियों ने अपने विचारों और भावनाओं से समाज को दिशा दी है। उनमें कबीर मेरे प्रिय कवि हैं। उनकी कविता सहज भाषा में जीवन की गहरी सच्चाइयाँ सामने लाती है। वह मुझे मनुष्य को उसकी जाति या बाहरी पहचान से नहीं, उसके आचरण से परखना सिखाती है।

कबीर भक्तिकाल की निर्गुण संत परंपरा के प्रमुख कवि हैं। उनके लिए ईश्वर किसी एक मंदिर, मस्जिद या संप्रदाय तक सीमित नहीं है। सच्ची भक्ति का संबंध निर्मल मन और प्रेम से है। इसीलिए वे बाहरी आडंबरों की अपेक्षा आत्मचिंतन और अच्छे आचरण को महत्त्व देते हैं। उनकी वाणी पढ़कर अपनी कमजोरियों को पहचानने की प्रेरणा मिलती है।

कबीर की निर्भीकता मुझे विशेष रूप से आकर्षित करती है। उन्होंने जातिगत ऊँच-नीच, धार्मिक कट्टरता और कर्मकांड का विरोध किया। वे किसी समुदाय के प्रति घृणा नहीं सिखाते, बल्कि हर मनुष्य को अपने भीतर झाँकने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका संदेश सामाजिक एकता और मानवीय समानता का संदेश है। आज भी भेदभाव और आपसी तनाव के बीच यह दृष्टि उपयोगी है।

उनकी भाषा जनजीवन के निकट है। साधारण वस्तुओं और रोजमर्रा के अनुभवों के माध्यम से वे कठिन बातें समझा देते हैं। कम शब्दों में प्रभावशाली बात कहने की उनकी कला अद्भुत है। उनकी साखियाँ पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे कोई अनुभवी व्यक्ति सीधे हमसे संवाद कर रहा हो।

मेरे लिए कबीर केवल पाठ्यपुस्तक के कवि नहीं, विवेक और संवेदना के शिक्षक भी हैं। उनसे मैंने सीखा है कि मनुष्यता का सम्मान करना, प्रश्न पूछना और अपने व्यवहार को सुधारना आवश्यक है। यही कारण है कि कबीर मेरे प्रिय कवि हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इस निबंध में कबीर का परिचय, उनकी प्रमुख काव्यगत और सामाजिक विशेषताएँ तथा उन्हें प्रिय मानने के व्यक्तिगत कारण स्पष्ट किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: प्रिय कवि पर लिखते समय केवल जीवन-परिचय न दें; उनकी दो या तीन विशेषताओं को अपने चयन के कारणों से अवश्य जोड़ें।

3(घ). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : अबला नहीं, सबला है नारी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान निबंध में विषय का स्पष्ट आशय, तर्कपूर्ण विवेचन और उपयुक्त उदाहरण आवश्यक हैं।
- नारी-सशक्तीकरण का अर्थ शिक्षा, सम्मान, सुरक्षा, समान अवसर और निर्णय लेने की स्वतंत्रता से है।

चरण 1: विषय का आशय और योजना समझें शीर्षक नारी को कमजोर मानने वाली रूढ़ि का विरोध करता है। भूमिका में इस रूढ़ि को स्पष्ट करेंगे। मुख्य भाग में नारी की क्षमताओं, विभिन्न क्षेत्रों में उसके योगदान, बाधाओं और आवश्यक सुधारों का विवेचन करेंगे। उपसंहार में समान अधिकारों और अवसरों के समर्थन का संदेश देंगे।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श निबंध अबला नहीं, सबला है नारी

नारी को लंबे समय तक कमजोर और दूसरों पर आश्रित मानने की प्रवृत्ति रही है। यह धारणा उसकी वास्तविक क्षमताओं को पहचानने में बाधक है। अवसर मिलने पर स्त्रियों ने बार-बार सिद्ध किया है कि वे साहस, बुद्धि, परिश्रम और नेतृत्व में किसी से कम नहीं हैं। इसलिए

नारी को अबला कहना अनुचित है; वह सबला है।

परिवार और समाज के निर्माण में स्त्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वह जिम्मेदारियाँ निभाने के साथ कठिन परिस्थितियों का सामना भी करती है। किंतु उसके व्यक्तित्व को केवल पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित नहीं किया जा सकता। उसकी अपनी आकांक्षाएँ, प्रतिभा और पहचान हैं। शिक्षा और स्वतंत्र निर्णय का अधिकार इन्हें विकसित करने में सहायता देता है।

आज महिलाएँ विज्ञान, चिकित्सा, प्रशासन, साहित्य, खेल और रक्षा जैसे अनेक क्षेत्रों में योगदान दे रही हैं। कल्पना चावला की अंतरिक्ष यात्रा और मैरी कॉम की खेल उपलब्धियाँ स्त्रियों के साहस तथा कठिन परिश्रम के उदाहरण हैं। गाँवों में खेती करने वाली, छोटे उद्यम चलाने वाली और परिवार का खर्च उठाने वाली असंख्य महिलाएँ भी अपनी दृढ़ता का परिचय देती हैं। सफलता केवल प्रसिद्ध नामों तक सीमित नहीं है।

फिर भी भेदभाव, अशिक्षा, हिंसा और असमान अवसर जैसी बाधाएँ बनी हुई हैं। इन बाधाओं के कारण किसी स्त्री का आगे न बढ़ पाना उसकी अक्षमता का प्रमाण नहीं है। समाज को बेटियों की शिक्षा, सुरक्षित परिवेश और काम के समान अवसर सुनिश्चित करने चाहिए। घर के काम तथा बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी भी मिलकर निभानी चाहिए।

नारी का सम्मान केवल प्रशंसा के शब्दों से नहीं, व्यवहार में समानता लाने से होगा। उसकी बात सुनना, उसके निर्णयों का सम्मान करना और उसकी स्वतंत्रता स्वीकार करना आवश्यक है। जब स्त्री अपनी प्रतिभा का पूरा विकास कर सकेगी, तब पूरा समाज आगे बढ़ेगा। नारी सबला है; आवश्यकता उसकी शक्ति को पहचानने और उसे समान अवसर देने की है।

चरण 3: निष्कर्ष नारी की शक्ति और उपलब्धियाँ उसकी क्षमता का प्रमाण हैं। शिक्षा, सुरक्षा, समान अवसर और निर्णय की स्वतंत्रता से इस क्षमता का पूर्ण विकास संभव है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में उपलब्धियों के साथ बाधाएँ और उनके ठोस उपाय भी लिखें, ताकि निबंध केवल प्रशंसा तक सीमित न रह जाए।

4. अपने क्षेत्र में मच्छरों से फैलने वाली बीमारियों के बढ़ते प्रकोप से अवगत कराते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को उचित कार्यवाही हेतु पत्र लिखिए और दो सुझाव भी दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वास्थ्य अधिकारी को लिखा जाने वाला पत्र औपचारिक शिकायत तथा जनहित में कार्रवाई का अनुरोध है। इसमें समस्या का स्थान, उसका प्रभाव और अपेक्षित उपाय स्पष्ट होने चाहिए।
- प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद-पता, विषय, संबोधन, विषयवस्तु तथा समापन पत्र के आवश्यक अंग हैं। भाषा विनम्र, तथ्यपरक और संक्षिप्त रहे।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना पत्र में क्षेत्र में रुके पानी, नालियों की गंदगी और मच्छरों की वृद्धि का उल्लेख करेंगे। बीमारी के अपुष्ट आँकड़े देने के स्थान पर लोगों के बुखार से पीड़ित होने तथा संक्रमण के खतरे को बताएँगे। दो स्पष्ट सुझाव होंगे: जलभराव हटाकर नियमित सफाई और मच्छर नियंत्रण के साथ स्वास्थ्य-जागरूकता अभियान।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 24, शांति विहार

दिल्ली

दिनांक: 15 जुलाई, 2017

स्वास्थ्य अधिकारी

नगर निगम, दिल्ली

विषय: क्षेत्र में मच्छरजनित बीमारियों की रोकथाम हेतु अनुरोध।

महोदय,

मैं आपका ध्यान शांति विहार में मच्छरों से फैलने वाली बीमारियों के बढ़ते प्रकोप की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। वर्षा का पानी खाली भूखंडों तथा टूटी सड़कों के गड्ढों में जमा है। नालियाँ भी गंदगी से अवरुद्ध हैं। इससे मच्छरों की संख्या बढ़ गई है। कई परिवारों के सदस्य

बुखार से पीड़ित हैं। डेंगू और मलेरिया के प्रसार की आशंका से निवासी चिंतित हैं। बच्चों और बुजुर्गों को विशेष परेशानी हो रही है।

इस स्थिति में मेरे दो सुझाव हैं। पहला, सफाई कर्मचारियों की सहायता से नालियाँ साफ कराई जाएँ और जमा पानी की निकासी की नियमित व्यवस्था हो। दूसरा, स्वास्थ्य विभाग मच्छरों के प्रजनन-स्थलों पर उपयुक्त नियंत्रण उपाय करे और घरों में पानी ढककर रखने तथा कूलर साफ करने के लिए जागरूकता अभियान चलाए।

कृपया क्षेत्र का शीघ्र निरीक्षण कराकर आवश्यक कार्रवाई करें। स्थानीय निवासी भी इस अभियान में सहयोग देने को तैयार हैं।

धन्यवाद।

भवदीय

अमन कुमार

स्थानीय निवासी

चरण 3: निष्कर्ष इस पत्र में समस्या की सूचना, शीघ्र कार्रवाई का अनुरोध और रोकथाम के दो स्पष्ट सुझाव औपचारिक शैली में प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: दो सुझावों को अलग-अलग स्पष्ट लिखें और स्वास्थ्य अधिकारी से अपेक्षित कार्रवाई को पत्र के अंत में अवश्य जोड़ें।

अथवा

4. 'स्वच्छता मिशन' के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए किसी संपादक को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को पत्र किसी सार्वजनिक समस्या या जनहित के विषय पर समाज और संबंधित संस्थाओं का ध्यान आकर्षित करता है। विषय पर तर्क तथा व्यावहारिक सुझाव आवश्यक हैं।
- स्वच्छता मिशन का महत्त्व स्वास्थ्य, पर्यावरण, मानवीय गरिमा और नागरिक भागीदारी से जुड़ा है। पत्र में औपचारिक प्रारूप के साथ प्रकाशन का अनुरोध भी होना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना प्रेषक का पता और दिनांक लिखकर संपादक को संबोधित करेंगे। मुख्य भाग में स्वच्छता और स्वास्थ्य का संबंध, कचरा प्रबंधन तथा शौचालयों के उपयोग का महत्त्व बताएँगे। अंत में नागरिकों और प्रशासन की साझी जिम्मेदारी पर बल देते हुए पत्र प्रकाशित करने का अनुरोध करेंगे।

चरण 2: पूर्ण आदर्श पत्र 18, विकास नगर

जयपुर

दिनांक: 15 जुलाई, 2017

संपादक महोदय

दैनिक जनवाणी

जयपुर

विषय: स्वच्छता मिशन के महत्त्व के संबंध में।

महोदय,

आपके प्रतिष्ठित समाचारपत्र के माध्यम से मैं स्वच्छता मिशन के महत्त्व की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। स्वच्छ परिवेश स्वस्थ जीवन का आधार है। सड़कों पर बिखरा कूड़ा, दूषित पानी और गंदी नालियाँ बीमारियों को बढ़ावा देती हैं। स्वच्छता अपनाने से संक्रमण की आशंका घटती है और सार्वजनिक स्थान सभी के लिए सुरक्षित तथा उपयोगी बनते हैं।

स्वच्छता मिशन हमें सफाई को अपनी दैनिक आदत बनाने की प्रेरणा देता है। घरों में गीला और सूखा कचरा अलग करना, कूड़ा निर्धारित स्थान पर डालना तथा शौचालयों का उपयोग करना आवश्यक है। सार्वजनिक शौचालयों की स्वच्छता विशेष रूप से महिलाओं की सुविधा

और गरिमा से भी जुड़ी है।

इस अभियान की सफलता केवल सफाई कर्मचारियों पर निर्भर नहीं रह सकती। नागरिकों को गंदगी फैलाने से बचना होगा और प्रशासन को नियमित कचरा-संग्रह, नालियों की सफाई तथा सुविधाओं के रखरखाव की व्यवस्था करनी होगी। विद्यालयों और स्थानीय समितियों द्वारा जागरूकता बढ़ाई जा सकती है।

कृपया इस पत्र को प्रकाशित कर लोगों को स्वच्छता मिशन में सक्रिय सहयोग देने के लिए प्रेरित करें।

धन्यवाद।

भवदीय

अमन कुमार

चरण 3: निष्कर्ष स्वच्छता मिशन स्वास्थ्य-सुरक्षा, पर्यावरण की रक्षा और सम्मानजनक जीवन का माध्यम है; उसकी सफलता नागरिकों तथा प्रशासन के निरंतर सहयोग से संभव है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र में विषय के सार्वजनिक महत्त्व पर तर्क दें और अंत में जनजागरण हेतु प्रकाशन का अनुरोध करें।

5(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : सम्पादकीय किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय समाचारपत्र के विचार-पक्ष की प्रमुख अभिव्यक्ति है। यह किसी महत्त्वपूर्ण सामयिक विषय पर पत्र की संस्थागत राय प्रस्तुत करता है।
- समाचार का उद्देश्य तथ्य देना है, जबकि संपादकीय उन्हीं तथ्यों के आधार पर विश्लेषण और दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

चरण 1: परिभाषा का आधार संपादकीय में किसी समसामयिक घटना, समस्या या मुद्दे का विश्लेषण किया जाता है। इसमें समाचारपत्र की नीति और विचार व्यक्त होते हैं; इसे केवल घटना का विवरण नहीं माना जाता।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर समाचारपत्र में प्रकाशित वह विचारप्रधान लेख, जिसमें किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचारपत्र का अपना दृष्टिकोण या मत व्यक्त किया जाता है, संपादकीय कहलाता है। यह सामान्यतः संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी सामयिक मुद्दे पर समाचारपत्र की संस्थागत राय व्यक्त करने वाला विचारप्रधान लेख संपादकीय है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में सामयिक विषय और समाचारपत्र का अपना दृष्टिकोण, ये दोनों बातें अवश्य लिखें।

5(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'एंकर बाइट' क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में एंकर खबर प्रस्तुत करता है और उससे संबंधित व्यक्तियों की रिकॉर्ड की गई प्रतिक्रिया भी दिखाई जाती है।
- बाइट किसी संबंधित व्यक्ति का संक्षिप्त कथन है। एंकर बाइट शैली में एंकर की खबर के साथ ऐसा कथन जोड़कर प्रसारण किया जाता है।

चरण 1: शब्द का प्रसंग समझें एंकर पहले समाचार की जानकारी देता है। फिर उस घटना से जुड़े व्यक्ति, प्रत्यक्षदर्शी या विशेषज्ञ का संक्षिप्त रिकॉर्ड किया हुआ कथन दिखाया-सुनाया जाता है। इससे खबर को संबंधित व्यक्ति की आवाज और प्रतिक्रिया मिलती है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर टेलीविजन समाचार की वह प्रस्तुति-शैली, जिसमें एंकर खबर बताता है और उसकी पुष्टि अथवा संबंधित पक्ष की प्रतिक्रिया के लिए किसी व्यक्ति का संक्षिप्त रिकॉर्ड किया हुआ कथन भी प्रसारित किया जाता है, एंकर बाइट कहलाती है।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर द्वारा प्रस्तुत समाचार के साथ संबंधित व्यक्ति का छोटा रिकॉर्ड किया हुआ कथन दिखाना एंकर बाइट शैली है।

त्वरित सुझाव: एंकर बाइट की परिभाषा में एंकर की खबर और संबंधित व्यक्ति की संक्षिप्त रिकॉर्ड की गई प्रतिक्रिया, दोनों जोड़ें।

5(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : अंशकालिक पत्रकार से क्या आशय है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों के प्रकार उनके कार्य-संबंध और सेवा की प्रकृति के आधार पर पहचाने जाते हैं।
- अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार-संस्था का पूर्णकालिक नियमित कर्मचारी नहीं होता।

चरण 1: कार्य की प्रकृति समझिए अंशकालिक पत्रकार आवश्यकता के अनुसार किसी समाचार-पत्र या अन्य समाचार-संस्था के लिए समाचार और सामग्री भेजता है। पत्रकारिता के अतिरिक्त उसका कोई अन्य व्यवसाय या कार्य भी हो सकता है।

चरण 2: पारिश्रमिक का आधार पहचानिए उसे प्रायः प्रकाशित सामग्री, समाचार या निर्धारित कार्य के आधार पर पारिश्रमिक मिलता है। उसे स्ट्रिंगर भी कहा जाता है। इसलिए अंशकालिक होने का आशय अनुभवहीन होना नहीं, संस्था से पूर्णकालिक रूप में संबद्ध न होना है।

चरण 3: निष्कर्ष अंशकालिक पत्रकार वह है जो किसी समाचार-संस्था के लिए पूर्ण समय काम न करके आवश्यकता के अनुसार समाचार भेजता है और सामान्यतः अपने कार्य या सामग्री के आधार पर पारिश्रमिक पाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में पूर्णकालिक सेवा का अभाव और समाचार भेजने का काम, ये दोनों बातें अवश्य जोड़ें।

5(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : संदेह करना पत्रकार के स्वभाव में क्यों आवश्यक है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विश्वसनीय पत्रकारिता का आधार सत्यापित तथ्य होते हैं, केवल प्राप्त सूचना नहीं।
- संदेह का अर्थ पूर्वाग्रह नहीं, सूचना की सत्यता की जाँच करने की प्रवृत्ति है।

चरण 1: सूचना को परखिए पत्रकार को मिली हर सूचना सत्य या निष्पक्ष हो, यह आवश्यक नहीं। कोई स्रोत अपने स्वार्थ से अधूरी या भ्रामक जानकारी दे सकता है। इसलिए पत्रकार को किसी कथन को तुरंत सच नहीं मान लेना चाहिए।

चरण 2: संदेह का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए संदेह पत्रकार को प्रश्न पूछने, प्रमाण जुटाने और दूसरे स्रोतों से पुष्टि करने के लिए प्रेरित करता है। इससे अफवाह या प्रचार को समाचार बना देने की भूल से बचा जा सकता है और जनता तक सही तथ्य पहुँचते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकार के स्वभाव में संदेह आवश्यक है, क्योंकि इससे वह प्रत्येक सूचना की जाँच और पुष्टि करता है तथा झूठी, अधूरी या भ्रामक सूचना के स्थान पर विश्वसनीय समाचार देता है।

त्वरित सुझाव: संदेह को नकारात्मक अविश्वास न लिखें; उसे तथ्य-जाँच और स्वतंत्र पुष्टि से जोड़कर उत्तर दें।

5(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'डेस्क' किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-निर्माण में संवाददाता समाचार जुटाते हैं और संपादकीय विभाग उन्हें प्रकाशन योग्य बनाता है।
- डेस्क समाचारों के चयन, संपादन और प्रस्तुति से संबंधित व्यवस्था है।

चरण 1: विभाग की भूमिका पहचानिए समाचार-पत्र के कार्यालय में जहाँ संवाददाताओं और अन्य स्रोतों से प्राप्त समाचारों को जाँचा, चुना और संपादित किया जाता है, उस संपादकीय विभाग को डेस्क कहते हैं। यह केवल काम करने की मेज का नाम नहीं है।

चरण 2: प्रमुख काम बताइए डेस्क पर समाचार की भाषा सुधारी जाती है, अनावश्यक अंश हटाए जाते हैं और उचित शीर्षक दिया जाता है। समाचार का महत्त्व देखकर उसका स्थान और प्रस्तुति भी निर्धारित की जाती है। इस प्रकार कच्ची सूचना प्रकाशन योग्य समाचार बनती है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-संस्था का वह संपादकीय विभाग डेस्क कहलाता है जहाँ समाचारों का चयन, संपादन, शीर्षकीकरण और प्रकाशन के लिए उनकी प्रस्तुति तय की जाती है।

त्वरित सुझाव: डेस्क की परिभाषा देते समय उसके चयन, संपादन और शीर्षक देने वाले कार्यों का उल्लेख करें।

---

6. 'बदलता शैक्षिक परिवेश' विषय पर एक फीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर किसी विषय को मानवीय अनुभव, रोचक दृश्य और सहज भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करता है।
- शैक्षिक बदलाव के लाभों के साथ पहुँच, समानता और शिक्षक की भूमिका पर विचार आवश्यक है।

चरण 1: प्रारूप निर्धारित कीजिए इस विषय पर फीचर का आकर्षक शीर्षक और लेखक का नाम दें। किसी कक्षा के परिचित दृश्य से आरंभ करें, फिर बदलते शिक्षण-साधनों, विद्यार्थियों के अनुभवों और चुनौतियों को जोड़ते हुए विचारोत्तेजक अंत करें। भाषा चित्रात्मक और प्रवाहपूर्ण रखें।

चरण 2: विषय-वस्तु की योजना बनाइए पहले पुस्तक और श्यामपट्ट से आगे बढ़ती कक्षा का दृश्य रखें। उसके बाद डिजिटल सामग्री, संवाद और गतिविधियों से सीखने के अवसर बताएँ। साथ ही उपकरणों की असमान उपलब्धता, स्क्रीन पर निर्भरता और जानकारी को समझने की आवश्यकता उठाएँ। अंत में तकनीक और मानवीय मार्गदर्शन के संतुलन पर बल दें।

चरण 3: पूर्ण फीचर लिखिए **कक्षा की खिड़की से बदलती दुनिया**

लेखक : अंशु

घंटी बजती है। बच्चे अपनी पुस्तकें खोलते हैं, लेकिन आज पाठ केवल पन्नों पर नहीं ठहरता। अध्यापक पर्दे पर बीज से पौधा बनने का दृश्य दिखाते हैं। पीछे बैठा बच्चा पूछ उठता है, "क्या अँधेरे में भी बीज उगेगा?" अगले ही पल कक्षा एक छोटे प्रयोग की योजना बनाने लगती है। यही प्रश्न पूछने की आजादी बदलते शैक्षिक परिवेश की पहचान है।

शिक्षा अब रटकर उत्तर सुनाने से आगे बढ़ रही है। परियोजनाएँ, समूह-चर्चाएँ, पुस्तकालय और प्रयोग विद्यार्थियों को सीखने में सहभागी बनाते हैं। डिजिटल सामग्री कठिन विषयों को दृश्य और ध्वनि के सहारे समझा सकती है। दूर बैठे विद्यार्थी भी उपलब्ध सामग्री से अपनी गति के अनुसार अभ्यास कर सकते हैं। शिक्षक का काम केवल जानकारी देना नहीं, जिज्ञासा जगाना और सही दिशा दिखाना भी है।

पर हर बच्चे की कक्षा एक जैसी नहीं। कहीं कंप्यूटर हैं, तो कहीं पर्याप्त पुस्तकें भी नहीं। इंटरनेट और उपकरणों का खर्च कई परिवारों के लिए बाधा है। सुविधा के इस अंतर को दूर किए बिना बदलाव अधूरा रहेगा। विद्यालय में साझा संसाधन, सुलभ पुस्तकालय और प्रशिक्षित शिक्षक इसलिए जरूरी हैं।

एक दूसरी चुनौती भी है। स्क्रीन पर उत्तर मिल जाना विषय को समझ लेना नहीं है। जानकारी की सत्यता परखना, अपनी भाषा में बात कहना और दूसरों को सुनना भी सीखना होगा। खेल के मैदान, कला और साथियों का सहयोग शिक्षा के उतने ही आवश्यक हिस्से हैं।

बदलाव की सफलता चमकते उपकरणों से नहीं, बच्चे की आँखों में उठते प्रश्नों से पहचानी जाएगी। जब तकनीक अवसर बढ़ाए, शिक्षक संवेदना से मार्गदर्शन करे और कोई विद्यार्थी पीछे न छूटे, तभी शिक्षा सचमुच नई दिशा पाएगी।

चरण 4: निष्कर्ष यह फीचर कक्षा के जीवंत दृश्य से आरंभ होकर शिक्षण में बदलाव, उसकी संभावनाओं और असमानताओं को सामने लाता है तथा समावेशी शिक्षा के आग्रह पर समाप्त होता है।

त्वरित सुझाव: फीचर में केवल लाभों की सूची न दें; किसी जीवंत दृश्य से आरंभ करके अनुभव, समस्या और संभावना को प्रवाह में जोड़ें।

अथवा

6. 'बाल मज़दूरी' विषय पर एक फीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर किसी सामाजिक विषय को मानवीय संवेदना, दृश्यात्मक आरंभ और सहज भाषा के साथ प्रस्तुत करता है। इसमें पाठक समस्या को समझने के साथ उससे भावनात्मक रूप से जुड़ता है।
- बाल मज़दूरी के विषय में बच्चे का छिनता बचपन, शिक्षा से वंचित होने के परिणाम और समाज की जिम्मेदारी उभरनी चाहिए। अप्रमाणित आँकड़ों से बचना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति आकर्षक शीर्षक और लेखक का नाम दें। आरंभ किसी परिचित दृश्य से करें, फिर बाल मज़दूरी की व्यापक समस्या की ओर बढ़ें। गरीबी, शिक्षा से दूरी और सस्ते श्रम की माँग का उल्लेख करते हुए बच्चे की गरिमा को केंद्र में रखें। अंत में पाठक को जिम्मेदार व्यवहार की प्रेरणा दें।

चरण 2: पूर्ण नमूना फीचर **नन्हे हाथों से छिनता बचपन**

लेखक : एक विद्यार्थी

चाय की दुकान पर गिलास धोते छोटे हाथों को देखिए। पास की सड़क से स्कूल जाते बच्चे निकलते हैं, पर वह बच्चा अपने काम में जुटा रहता है। उसकी आँखों में भी किताबों, खेल और दोस्तों के सपने हो सकते हैं। फिर उसके हिस्से में केवल झूठे गिलास और मालिक की पुकार क्यों आती है?

बाल मज़दूरी केवल काम करते बच्चे का दृश्य नहीं, बचपन से छिनते अवसरों की कहानी है। जिन हाथों में पेंसिल होनी चाहिए, वे ढाबों, दुकानों और कारखानों में काम करते दिखाई देते हैं। लंबे समय तक काम करने से उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है और पढ़ाई पीछे छूट जाती है। खेल, विश्राम और सुरक्षित वातावरण से वंचित बचपन असमानता की दीवार को और ऊँचा करता है।

गरीबी इस समस्या का बड़ा कारण है, लेकिन पूरी कहानी नहीं। परिवार की आर्थिक असुरक्षा, शिक्षा तक पहुँच की कठिनाई और सस्ते श्रम की माँग भी बच्चों को काम की ओर धकेलती है। ऐसे परिवार को केवल दोष देने से समाधान नहीं निकलेगा। उसे आजीविका का सहारा और बच्चे को विद्यालय में टिके रहने का अवसर मिलना चाहिए।

हमारी जिम्मेदारी भी छोटी नहीं है। घर और दुकान में बच्चों से काम न करवाना, उनके श्रम को सामान्य मानकर स्वीकार न करना और संकट में दिखने वाले बच्चे के लिए उचित सहायता जुटाना जरूरी है। विद्यालयों को भी बच्चों के लिए स्वागतपूर्ण बनना होगा, ताकि पढ़ाई बोझ के बजाय भविष्य का दरवाजा लगे।

किसी बच्चे के हाथ से काम का औजार हटाकर उसे किताब देना तभी सार्थक है, जब उसके परिवार की रोटी की चिंता भी समझी जाए। आइए, ऐसा समाज बनाएँ जहाँ हर बच्चे की सुबह मालिक की डाँट से नहीं, सीखने और खेलने की खुशी से शुरू हो।

चरण 3: निष्कर्ष यह फीचर दृश्यात्मक आरंभ, बालकेंद्रित संवेदना, कारणों की विवेचना और जिम्मेदारी के आह्वान द्वारा विषय को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: फीचर की शुरुआत सजीव दृश्य से करें और अंत को उसी बच्चे के बेहतर भविष्य से जोड़ें; केवल सूखी जानकारी की सूची न बनाएँ।

7. 'नारी सुरक्षा' विषय पर आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय का स्पष्ट परिचय, समस्या के कारणों का तार्किक विवेचन, व्यावहारिक उपाय और निष्कर्ष दिया जाता है। भाषा विचारपूर्ण, सहज और विषयानुकूल होनी चाहिए।
- नारी सुरक्षा को केवल अपराध से बचाव तक सीमित नहीं करना चाहिए। इसमें सम्मान, समान अवसर और घर से सार्वजनिक स्थानों तक निर्भय होकर जीवन जीने की स्वतंत्रता भी शामिल है।

चरण 1: प्रारूप और विषययोजना शीर्षक और लेखक के नाम के बाद भूमिका लिखें। मुख्य भाग में असुरक्षा के सामाजिक कारण, शिक्षा और संवेदनशीलता की भूमिका, सार्वजनिक सुविधाओं तथा शिकायत व्यवस्था की आवश्यकता समझाएँ। समापन में महिलाओं की स्वतंत्रता और सभी नागरिकों की जिम्मेदारी पर बल दें। प्रश्न में शब्दसीमा नहीं दी गई है, इसलिए विषय के आवश्यक पक्षों को संतुलित विस्तार दें।

चरण 2: पूर्ण नमूना आलेख **नारी सुरक्षा : सम्मान और स्वतंत्रता का आधार**

लेखक : एक विद्यार्थी

किसी समाज की प्रगति का वास्तविक प्रमाण यह है कि उसकी महिलाएँ कितनी निर्भय होकर जीवन जी सकती हैं। घर, विद्यालय, कार्यस्थल और सड़क पर सुरक्षा मिलना उनका अधिकार है। भय के कारण पढ़ाई, रोजगार या यात्रा का अवसर छोड़ना पड़े, तो विकास का दावा अधूरा रह जाता है।

नारी असुरक्षा की जड़ें केवल अपराधियों के व्यवहार में नहीं, उस सामाजिक सोच में भी हैं जो स्त्री को कमतर समझती है। अपमानजनक टिप्पणियों को मजाक कहकर टालना, पीड़ित को दोष देना और अन्याय देखकर चुप रहना इस समस्या को बढ़ाता है। सुरक्षा के नाम पर महिलाओं की आवाजाही रोक देना भी उचित समाधान नहीं है। आवश्यकता उस वातावरण को बदलने की है जो हिंसा और भेदभाव को सहन करता है।

परिवर्तन की शुरुआत परिवार और विद्यालय से होनी चाहिए। लड़के और लड़कियों को समान सम्मान देना, सहमति और व्यक्तिगत सीमाओं का महत्व समझाना तथा घर की जिम्मेदारियाँ समान रूप से बाँटना जरूरी है। पुस्तकीय शिक्षा के साथ संवेदनशील व्यवहार की शिक्षा भी मिले, तभी समानता जीवन का हिस्सा बनेगी।

सार्वजनिक व्यवस्था को भी जवाबदेह होना होगा। सड़कों पर पर्याप्त रोशनी, सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन और संस्थानों में प्रभावी शिकायत व्यवस्था आवश्यक हैं। शिकायत करने वाली महिला को अपमान या संदेह का सामना न करना पड़े। उसकी बात गंभीरता से सुनी जाए और निष्पक्ष कार्रवाई हो। डिजिटल माध्यमों पर होने वाले उत्पीड़न के प्रति भी जागरूकता जरूरी है।

नागरिकों की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण है। उत्पीड़न देखकर मूक दर्शक बने रहने के बजाय परिस्थिति के अनुसार सुरक्षित हस्तक्षेप और सहायता करनी चाहिए। आत्मरक्षा का प्रशिक्षण उपयोगी है, लेकिन सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं पर डालना गलत होगा। परिवार, समाज और प्रशासन सभी को अपना दायित्व निभाना है।

नारी सुरक्षा का लक्ष्य भय में बंद जीवन नहीं, सम्मान के साथ स्वतंत्र जीवन है। जब प्रत्येक महिला बिना डर अपने निर्णय ले सकेगी, तभी समानता और सभ्यता के हमारे आदर्श व्यवहार में साकार होंगे।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख नारी सुरक्षा को सम्मान और समानता से जोड़ते हुए शिक्षा, सामाजिक सोच, सार्वजनिक व्यवस्था और नागरिक जिम्मेदारी के स्तर पर उपाय प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: नारी सुरक्षा पर लिखते समय प्रतिबंध लगाने के बजाय सुरक्षित वातावरण, समान सम्मान और संस्थागत जवाबदेही के ठोस उपाय दें।

अथवा

7. 'बदलते जीवन मूल्य' विषय पर आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में किसी सामाजिक विषय का तथ्यपूर्ण, विचारपूर्ण और क्रमबद्ध विवेचन किया जाता है।
- जीवन-मूल्यों में बदलाव का आकलन करते हुए सकारात्मक परिवर्तनों और नैतिक चुनौतियों, दोनों पर विचार करना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विचार-योजना आलेख के लिए विषयानुकूल शीर्षक तथा लेखक का नाम दें। भूमिका में जीवन-मूल्यों का अर्थ बताकर मुख्य भाग में बदलती सामाजिक परिस्थितियों, उनके लाभ और समस्याओं की चर्चा करें। अंत में मानवीय मूल्यों को बचाने का व्यावहारिक सुझाव दें।

चरण 2: पूर्ण नमूना आलेख **बदलते जीवन मूल्य**

लेखक : एक विद्यार्थी

जीवन-मूल्य वे मान्यताएँ हैं जो हमारे आचरण को दिशा देती हैं। सत्य, सहयोग, संवेदना और ईमानदारी जैसे मूल्य समाज को जोड़ते हैं। समय के साथ जीवन की परिस्थितियाँ बदलती हैं, इसलिए मूल्यों की अभिव्यक्ति में भी परिवर्तन स्वाभाविक है। प्रश्न यह है कि यह परिवर्तन हमें अधिक मानवीय बना रहा है या केवल अधिक सफल दिखा रहा है।

आज शिक्षा, तकनीक और आर्थिक आत्मनिर्भरता ने व्यक्ति को नए अवसर दिए हैं। स्त्रियों की बढ़ती भागीदारी, समानता की चेतना और रूढ़ियों पर सवाल उठाने का साहस स्वागतयोग्य बदलाव हैं। अब अनेक युवा जन्म और जाति की अपेक्षा योग्यता तथा परिश्रम को महत्त्व देते हैं। यह परिवर्तन समाज को न्यायपूर्ण बनाने में सहायक है।

दूसरी ओर, उपभोक्तावाद और तीखी प्रतिस्पर्धा ने सफलता का अर्थ धन, पद और दिखावे तक सीमित कर दिया है। संबंधों के लिए समय कम होता जा रहा है। बुजुर्गों की उपेक्षा, पर्यावरण के प्रति असंवेदनशीलता और अनुचित साधनों से आगे बढ़ने की प्रवृत्ति चिंताजनक है। सामाजिक माध्यमों पर दिखाई देने वाली लोकप्रियता को भी कभी-कभी वास्तविक उपलब्धि समझ लिया जाता है।

इस स्थिति में पुराने समय की हर बात को आदर्श मानना उचित नहीं; उसी प्रकार हर नई प्रवृत्ति को प्रगति कहना भी गलत है। हमें परिवर्तन की कसौटी मानव-कल्याण को बनाना होगा। परिवार संवाद और व्यवहार से संवेदना सिखाए, विद्यालय सहयोग तथा ईमानदारी को प्रोत्साहित करें और नागरिक अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों को भी समझें।

तकनीकी उन्नति तभी सार्थक है जब उसके साथ नैतिक विवेक हो। आधुनिकता और मानवीय संवेदना का संतुलन ही बदलते जीवन-मूल्यों को स्वस्थ दिशा दे सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख का केंद्रीय विचार है कि समानता और स्वतंत्रता जैसे सकारात्मक बदलाव अपनाते हुए संवेदना, ईमानदारी और सामाजिक उत्तरदायित्व सुरक्षित रखे जाएँ।

त्वरित सुझाव: इस विषय में केवल मूल्यों के पतन की चर्चा न करें; सकारात्मक बदलाव का उदाहरण देकर संतुलित निष्कर्ष लिखें।

8. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना
मैं पेंच को खोलने के बजाए
उसे बेतरह कसता चला जा रहा था।
क्योंकि इस करतब पर मुझे
साफ सुनाई दे रही थी
तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह। [8 अंक]

8(क). तमाशबीन किन्हें कहा गया है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में तमाशबीनों की पहचान उनकी शाबाशी और वाह-वाह से होती है।
- यहाँ प्रशंसा भाषा की सार्थकता की अपेक्षा भाषिक करतब पर मिल रही है।

चरण 1: तमाशबीनों की पहचान तमाशबीन उन दर्शकों या श्रोताओं को कहा गया है जो कवि की अभिव्यक्ति के बाहरी प्रदर्शन पर वाह-वाह कर रहे हैं। वे बात के अर्थ और उसे सहजता से समझाने की सफलता की अपेक्षा कवि के शब्दों के खेल से प्रभावित हैं।

चरण 2: इस नामकरण का कारण पंक्ति "तमाशबीनों की शाबाशी और वाह-वाह बताती है कि वे रचना को समझने के बजाय तमाशे की तरह उसका आनंद ले रहे हैं। कवि कठिनाई सुलझाने के स्थान पर पेंच कस रहा है, फिर भी उसे प्रशंसा मिल रही है। उनकी प्रशंसा कवि को सही दिशा नहीं दिखाती, बल्कि उलझाव बढ़ाने को प्रोत्साहित करती है। इसी प्रदर्शनप्रिय, सतही दृष्टि के कारण उन्हें तमाशबीन कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष तमाशबीन बाहरी भाषिक चमत्कार पर वाह-वाह करने वाले दर्शक-श्रोता हैं; वे अर्थ की सहजता को परखे बिना कवि के करतब का आनंद लेते हैं।

त्वरित सुझाव: पहचान के साथ कारण भी लिखें और प्रमाण के लिए शाबाशी तथा वाह-वाह वाले शब्दों से उत्तर जोड़ें।

8(ख). पेंच खोलने से कवि का क्या आशय है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पेंच खोलना यहाँ अभिव्यक्ति की उलझन सुलझाने का प्रतीक है।
- कवि के सामने मुख्य समस्या बात को सही और सहज भाषा में व्यक्त करना है।

चरण 1: पेंच का प्रतीकात्मक अर्थ काव्यांश में पेंच वास्तविक यंत्र का हिस्सा मात्र नहीं, बल्कि भाषा और कथ्य के बीच पैदा हुई उलझन का प्रतीक है। कवि जो कहना चाहता है, उसे व्यक्त करने में कठिनाई अनुभव कर रहा है। इस कठिनाई को समझना और सुलझाना ही आवश्यक है।

चरण 2: पेंच खोलने का आशय पेंच खोलने से कवि का आशय है कि वह धैर्य से अभिव्यक्ति की समस्या समझकर अपनी बात स्पष्ट, सहज और अर्थपूर्ण ढंग से कहे। "खोलने के बजाए उसे कसते जाने का उल्लेख बताता है कि वह उलटे शब्दों के प्रदर्शन में बात को और उलझा रहा है। यहाँ लक्ष्य पाठक तक भाव पहुँचाना है, केवल शब्दों से प्रभावित करना नहीं। इसलिए पेंच खोलना भाषा की जटिलता हटाकर कथ्य को संप्रेषणीय बनाना है।

चरण 3: निष्कर्ष पेंच खोलने का अर्थ है भाषा की उलझन दूर करके इच्छित बात को सहज, स्पष्ट और प्रभावी रूप में व्यक्त करना।

त्वरित सुझाव: पेंच को भाषा की उलझन से जोड़ें; उत्तर में स्पष्ट अभिव्यक्ति और धैर्यपूर्वक समाधान, दोनों का उल्लेख करें।

8(ग). 'करतब' शब्द का प्रयोग कवि ने अपने किस कार्य के लिए किया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- करतब शब्द भाषा के बाहरी कौशल और चमत्कार-प्रदर्शन की ओर संकेत करता है।
- इस प्रयोग में कवि अपने ही अभिव्यक्ति-प्रयास पर व्यंग्य करता है।

चरण 1: कवि का संबंधित कार्य कवि धैर्यपूर्वक कठिनाई समझकर पेंच खोलने के बजाय उसे बेतरह कसता जा रहा है। अभिव्यक्ति के स्तर पर इसका अर्थ है कि वह सीधी बात को सरल बनाने की जगह शब्दों और भाषा के कौशल से और जटिल बना रहा है।

चरण 2: करतब कहने का भाव कवि ने अपने इसी अनावश्यक भाषिक कौशल-प्रदर्शन के लिए करतब शब्द का प्रयोग किया है। उसका ध्यान बात की सार्थक अभिव्यक्ति से हटकर दर्शकों की वाह-वाह पाने पर टिक गया है। जैसे तमाशे में करतब देखकर तालियाँ बजती हैं, वैसे ही उसके शब्दों के प्रदर्शन पर शाबाशी मिल रही है; कवि अपनी इस चूक को पहचान रहा है। इसलिए यह शब्द आत्मव्यंग्य भी व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष करतब से आशय सीधी बात को शब्दों के कौशल से उलझाने और तमाशबीनों की वाह-वाह पाने वाले कवि के भाषिक प्रदर्शन से है।

त्वरित सुझाव: करतब का अर्थ केवल कविता लिखना न बताएँ; पेंच कसने और प्रशंसा पाने के संदर्भ से उसका आशय स्पष्ट करें।

8(घ). भाषा प्रयोग की मुश्किलों को कैसे समझा जा सकता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा की कठिनाई समझने के लिए धैर्य और कथ्य के प्रति सजगता आवश्यक है।
- बाहरी प्रशंसा अभिव्यक्ति की सफलता की विश्वसनीय कसौटी नहीं है।

चरण 1: धैर्य से समस्या पहचानना भाषा-प्रयोग की मुश्किलों को समझने के लिए पहले रुककर धैर्यपूर्वक विचार करना चाहिए कि कौन-सी बात कहनी है और उसके संप्रेषण में बाधा कहाँ है। काव्यांश का कथन "सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना इसी आवश्यक सावधानी की ओर संकेत करता है।

चरण 2: सहज अभिव्यक्ति को कसौटी बनाना शब्दों के चमत्कार और श्रोताओं की वाह-वाह से प्रभावित होने के बजाय कथ्य की स्पष्टता पर ध्यान देना चाहिए। जब भाषा भाव को खोलती है, तब अभिव्यक्ति सफल होती है; जब वही उसे उलझाती है, तब कठिनाई बढ़ती है। इसलिए धैर्य, अर्थ की समझ और सहज भाषा का चुनाव मिलकर भाषिक मुश्किलों को समझने तथा सुलझाने में सहायता करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भाषा-प्रयोग की मुश्किलें धैर्यपूर्वक कथ्य और अभिव्यक्ति की बाधा समझने तथा वाह-वाह से बचकर सहज, स्पष्ट भाषा चुनने से समझी जा सकती हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर का आरंभ धैर्य से करें और अंत स्पष्ट संप्रेषण से; यही दिए गए काव्यांश के दो निर्णायक संकेत हैं।

अथवा

8. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

सचमुच मुझे दंड दो कि हो जाऊँ
पाताली अँधेरे की गुहाओं में विवरों में
धुएँ के बादलों में
बिलकुल मैं लापता
लापता कि वहाँ भी तो तुम्हारा ही सहारा है !!
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
या मेरा जो होता-सा लगता है, होता-सा संभव है
सभी वह तुम्हारे ही कारण के कार्यों का घेरा है, कार्यों का वैभव है
अब तक तो जिन्दगी में जो कुछ था, जो कुछ है
सहर्ष स्वीकारा है
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।

[8 अंक]

8(क). आशय स्पष्ट कीजिए : 'तुम्हारे ही कारण के कार्यों का घेरा है।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्ति का आशय उसके प्रसंग और आगे आने वाली पंक्तियों से स्पष्ट किया जाता है।
- प्रिय के प्रति कृतज्ञता और अपने अस्तित्व की स्वीकृति इस अंश के केंद्रीय भाव हैं।

चरण 1: कारण और कार्य का संबंध कवि प्रिय को अपने जीवन का मूल प्रेरक मानता है। उसके पास जो कुछ वास्तव में है और जो भविष्य में प्राप्त होना संभव लगता है, वह प्रिय के स्नेह और प्रभाव से बना है। यहाँ कारण प्रिय की प्रेरणा है और कार्य उससे विकसित जीवन की उपलब्धियाँ, अनुभव तथा भाव हैं।

चरण 2: व्याप्त प्रभाव का आशय कार्यों का घेरा कहने से आशय है कि कवि के पूरे व्यक्तित्व और जीवन में प्रिय का प्रभाव फैला हुआ है। वह किसी एक सफलता को ही प्रिय की देन नहीं मानता; अपने समूचे अस्तित्व और संभावनाओं को उसी से जुड़ा अनुभव करता है। इसीलिए अगली पंक्ति में इन्हें कार्यों का वैभव कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष इस पंक्ति में कवि स्वीकार करता है कि उसका व्यक्तित्व, अनुभव, उपलब्धियाँ और संभावनाएँ प्रिय की प्रेरणा से विकसित हुई हैं; उसका पूरा जीवन प्रिय के प्रभाव से घिरा है।

त्वरित सुझाव: कारण को प्रिय की प्रेरणा और कार्य को कवि के जीवन में उसके परिणाम मानकर पंक्ति का आशय जोड़ें।

8(ख). कवि दंड क्यों पाना चाहता है? दंड में उसे क्या पाने की चाहत है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि की दंड की कामना उसके गहरे भावनात्मक लगाव और उससे मुक्ति की आकांक्षा को प्रकट करती है।
- अँधेरी गुफाएँ, विवर और धुएँ के बादल लुप्त हो जाने तथा विस्मृति के बिंब हैं।

चरण 1: दंड माँगने का कारण कवि प्रिय के अत्यंत गहरे स्नेह और प्रभाव से पूरी तरह घिरा हुआ है। यह लगाव इतना व्यापक है कि वह उससे अलग अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं देख पाता। इसी भावनात्मक घेराव से छुटकारा पाने और प्रिय को भूल सकने के लिए वह दंड

की कामना करता है।

चरण 2: दंड में अपेक्षित स्थिति वह चाहता है कि पाताल के अँधेरे, गुफाओं, विवरों और धुएँ के बादलों में इतना लापता हो जाए कि प्रिय की स्मृति से दूर जा सके। किंतु वहाँ भी प्रिय का सहारा अनुभव होता है। इस स्वीकार से उसकी मुक्ति की चाह और प्रिय से अटूट संबंध, दोनों साथ प्रकट होते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि प्रिय के सर्वव्यापी स्नेह और प्रभाव से मुक्ति चाहता है, इसलिए दंड माँगता है। दंड में वह गहरे अँधेरे में लुप्त होकर प्रिय को भूल जाना चाहता है, यद्यपि वहाँ भी उसी का सहारा पाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दंड का कारण और दंड में चाही गई अवस्था अलग-अलग लिखें; अंत में वहाँ भी प्रिय का सहारा मिलने का संकेत दें।

8(ग). प्रियतम के बारे में कवि का क्या अनुभव है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस काव्यांश में प्रिय कवि के अस्तित्व और जीवनानुभवों का आधार है।
- काव्यगत अनुभव को अंश के बिंबों और कथनों से प्रमाणित करना चाहिए।

चरण 1: हर परिस्थिति में सहारा कवि अनुभव करता है कि प्रिय से उसका संबंध बहुत गहरा और अटूट है। वह चाहे पाताल की अँधेरी गुफाओं और विवरों में छिप जाए या धुएँ के बादलों में खो जाए, प्रिय का सहारा वहाँ भी बना रहता है। बाहरी दूरी या लुप्त हो जाना इस आंतरिक संबंध को समाप्त नहीं कर सकता।

चरण 2: जीवन का आधार उसका यह भी अनुभव है कि जो कुछ उसका है और जो आगे उसका हो सकता है, सब प्रिय के प्रभाव और प्रेरणा का परिणाम है। अपने व्यक्तित्व, उपलब्धियों और संभावनाओं में उसे उसी की छाप दिखाई देती है। इसलिए प्रिय केवल सुख का साथी नहीं, उसके समूचे जीवन का आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का अनुभव है कि प्रिय सर्वत्र उसके साथ है। उससे दूर या लापता होने पर भी उसी का सहारा मिलता है और उसका समूचा अस्तित्व प्रिय की प्रेरणा तथा प्रभाव से निर्मित है।

त्वरित सुझाव: प्रिय की सर्वव्यापकता बताने के लिए अँधेरी गुफाओं में भी सहारा मिलने और सब कुछ उसी की देन होने के दोनों प्रमाण जोड़ें।

8(घ). कवि ने जीवन की हर स्थिति को सहर्ष क्यों स्वीकार किया है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीवन की स्वीकृति का कारण कवि का प्रिय के प्रति गहरा प्रेम और विश्वास है।
- अंश में इसलिए शब्द कवि की स्वीकृति और उसके कारण के बीच सीधा संबंध बताता है।

चरण 1: जीवन को प्रिय की देन मानना कवि मानता है कि उसके जीवन में अब तक जो कुछ रहा है और आज जो कुछ है, उस सबके निर्माण में प्रिय का प्रभाव है। अपनी उपलब्धियों, अनुभवों और संभावनाओं को वह उसी के कारण उत्पन्न कार्यों का वैभव कहता है। इस भाव से जीवन की अलग-अलग स्थितियाँ भी उसके लिए आत्मीय हो जाती हैं।

चरण 2: प्रिय की पसंद से जुड़ी स्वीकृति कवि के अनुसार उसका जो कुछ भी है, वह प्रिय को प्यारा है। इसलिए जीवन की स्थितियों को अस्वीकार करना उसके लिए प्रिय से जुड़े अनुभवों को अस्वीकार करने जैसा होगा। प्रिय के प्रति प्रेम के कारण वह सुखद और कठिन, दोनों तरह के अनुभवों को हृदय से अपना लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने जीवन की हर स्थिति सहर्ष स्वीकार की है क्योंकि वह उसे प्रिय की देन मानता है और उसका सब कुछ प्रिय

को प्यारा है। प्रिय के प्रति प्रेम कठिन अनुभवों को भी स्वीकार करने का आधार बनता है।

त्वरित सुझाव: अंतिम पंक्ति वह तुम्हें प्यारा है को कारण बनाकर उत्तर लिखें और उसे प्रिय की देन होने के भाव से जोड़ें।

9. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर।
आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ बीर रस।। [6 अंक]

9(क). काव्यांश का भाव सौंदर्य लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव सौंदर्य में पात्रों की मनःस्थिति और प्रसंग में उत्पन्न भावों की व्यंजना स्पष्ट की जाती है।
- करुण वातावरण में आशा और उत्साह का उदय इस अंश की प्रमुख विशेषता है।

चरण 1: राम और वानरों की व्याकुलता लक्ष्मण की मूर्च्छा से दुखी राम विलाप कर रहे हैं। उनके प्रलाप को सुनकर वानर समुदाय भी अत्यंत व्याकुल हो उठता है। इससे राम का भाई के प्रति गहरा स्नेह और राम के दुख से वानरों का आत्मीय जुड़ाव व्यक्त होता है। पूरा वातावरण शोक और असहायता से भर जाता है।

चरण 2: हनुमान के आने से भाव परिवर्तन इसी समय हनुमान का आगमन होता है। उनकी उपस्थिति निराश वानरों के लिए आशा और उत्साह का संचार करती है। कवि इस परिवर्तन को करुण रस के बीच वीर रस के आने जैसा बताता है। शोक के बीच साहस का यह संयोग हनुमान के पराक्रम और संकटमोचक भूमिका को उभारता है।

चरण 3: निष्कर्ष राम का भ्रातृप्रेम, उनके शोक से वानरों की व्याकुलता और हनुमान के आगमन से जागती आशा इस अंश का भाव सौंदर्य हैं। करुण वातावरण में वीरता का उदय प्रसंग को प्रभावशाली बनाता है।

त्वरित सुझाव: भाव सौंदर्य में पहले शोक और व्याकुलता, फिर हनुमान के आने पर आशा एवं उत्साह का परिवर्तन स्पष्ट करें।

9(ख). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा अलंकार में किसी वस्तु या स्थिति की समानता दूसरी से वाचक शब्द द्वारा व्यक्त होती है।
- अनुप्रास में एक वर्ण की आवृत्ति से भाषा में ध्वनिगत सुंदरता आती है।

चरण 1: उपमा की पहचान जिमि करुना महँ बीर रस में उपमा अलंकार है। जिमि उपमावाचक शब्द है, जिसका अर्थ जैसे है। शोकाकुल वानर समुदाय के बीच हनुमान का आगमन उपमेय है और करुण रस में वीर रस का उदय उपमान है। दोनों में निराशा के बीच उत्साह और साहस के संचार की समानता दिखाई गई है।

चरण 2: अनुप्रास की सुंदरता प्रभु प्रलाप में प वर्ण और बिकल भए बानर में ब वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार का सौंदर्य आता है। इन ध्वनियों की पुनरावृत्ति कथन को लय और प्रवाह देती है। उपमा जहाँ भाव परिवर्तन को सजीव करती है, वहीं अनुप्रास भाषा को श्रुतिमधुर और प्रभावपूर्ण बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में जिमि करुना महँ बीर रस में उपमा तथा प्रभु प्रलाप और बिकल भए बानर जैसे प्रयोगों में अनुप्रास अलंकार है। ये क्रमशः भावचित्र और भाषा की लय को प्रभावशाली बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: उपमा के साथ जिमि वाचक शब्द तथा उपमेय-उपमान बताएँ; अनुप्रास के लिए आवृत्त वर्ण का स्पष्ट उदाहरण दें।

9(ग). भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषागत विशेषताओं में भाषा का रूप, शब्द-चयन, लय और अभिव्यक्ति की शैली देखी जाती है।
- विशेषता को काव्यांश के वास्तविक शब्दों से जोड़ने पर उत्तर प्रमाणपूर्ण बनता है।

चरण 1: अवधी और सहज शब्दावली काव्यांश की भाषा साहित्यिक अवधी है। सुनि, भए, आइ, गयउ और जिमि जैसे रूप इसकी पहचान कराते हैं। प्रभु, प्रलाप और करुना जैसे शब्द भावों की गंभीरता बढ़ाते हैं। भाषा संक्षिप्त होने पर भी राम के शोक, वानरों की व्याकुलता और हनुमान के आगमन का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करती है।

चरण 2: लयात्मक और चित्रात्मक अभिव्यक्ति गायन योग्य लय, तुक और ध्वनियों की आवृत्ति से भाषा में प्रवाह तथा मधुरता है। वर्णनात्मक शैली में घटनाक्रम आगे बढ़ता है और उपमा के माध्यम से भाव परिवर्तन सजीव हो जाता है। करुण और वीर भावों की अभिव्यक्ति के अनुरूप शब्द-चयन होने से थोड़े शब्दों में प्रभावपूर्ण दृश्य निर्मित होता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश की भाषा साहित्यिक अवधी, सहज, लयात्मक और भावानुकूल है। अवधी शब्दरूप, अनुप्रास, उपमा और चित्रात्मक वर्णन इसे संक्षिप्त होते हुए भी प्रभावशाली तथा श्रुतिमधुर बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: सिर्फ मधुर भाषा न लिखें; सुनि, भए, गयउ जैसे अवधी रूपों और ध्वनि-आवृत्ति का उदाहरण देकर विशेषता सिद्ध करें।

10(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए : विप्लव के बादल का स्वागत कौन-सा वर्ग करता है और क्यों? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बादल क्रांति और परिवर्तन का प्रतीक है; उसका गर्जन शोषण से बने अन्यायपूर्ण ढाँचे को चुनौती देता है।
- वर्गीय स्थिति के अनुसार परिवर्तन का प्रभाव अलग पड़ता है; पीड़ितों के लिए वही परिवर्तन मुक्ति की आशा बनता है।

चरण 1: स्वागत करने वाले वर्ग को पहचानें विप्लव के बादल का स्वागत गरीब, शोषित और श्रमजीवी वर्ग करता है। कविता में छोटे पौधों तथा अधीर कृषक के माध्यम से इसी वर्ग की आकांक्षा व्यक्त हुई है। छोटे पौधे लहराकर बादल को बुलाते हैं, जबकि किसान उसे परिवर्तन लाने वाली शक्ति मानकर पुकारता है।

चरण 2: स्वागत का कारण स्पष्ट करें इस वर्ग का जीवन अभाव, भूख और शोषण से घिरा है। कृषक का सार शोषक व्यवस्था ने चूस लिया है; इसलिए उसे अपनी दुर्दशा समाप्त होने की प्रतीक्षा है। बादल वर्षा से धरती को जीवन देता है और विप्लव के प्रतीक रूप में शोषण की व्यवस्था को बदलने का विश्वास जगाता है। इसके विपरीत संपन्न वर्ग अपने संचित वैभव के नष्ट होने की आशंका से भयभीत है।

चरण 3: प्रतीकों का सामाजिक अर्थ जोड़ें छोटे पौधों का प्रसन्न होकर हिलना साधारण जन के उत्साह का बिंब है। बादल की गर्जना इन्हें डराती नहीं, बल्कि इनके भीतर नवजीवन का विश्वास भरती है। इसीलिए स्वागत का कारण केवल पानी मिलना नहीं, जीवन की विषमता के समाप्त होने की उम्मीद भी है।

चरण 4: निष्कर्ष अतः गरीब, किसान और शोषित श्रमजीवी वर्ग विप्लव के बादल का स्वागत करता है, क्योंकि उसे इससे शोषण से मुक्ति, जीवन में समृद्धि और न्यायपूर्ण परिवर्तन की आशा है।

त्वरित सुझाव: बादल के स्वागत को किसान की भूख और छोटे पौधों की प्रसन्नता से जोड़कर कारण स्पष्ट करें।

10(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए : 'कैमरे में बंद अपाहिज कविता' कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है, कैसे? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता करुणा के प्रदर्शन और सच्ची मानवीय संवेदना के अंतर को उजागर करती है।
- किसी की पीड़ा को दर्शकों के मनोरंजन और कार्यक्रम की सफलता का साधन बनाना अमानवीय है।

चरण 1: कार्यक्रम संचालकों का व्यवहार देखें कविता में दूरदर्शन के कार्यक्रमकर्ता दिव्यांग व्यक्ति की कठिनाइयों को समझने के स्थान पर उसका दुख कैमरे में दिखाना चाहते हैं। वे उससे बार-बार ऐसे प्रश्न करते हैं जिनसे वह अपनी असमर्थता पर रो पड़े। उसके दुख की गहराई समझना उनका उद्देश्य नहीं है; वे उसके चेहरे पर पीड़ा और आँसू का दृश्य प्राप्त करने के लिए दबाव बनाते हैं।

चरण 2: संवेदनहीनता का आशय समझाएँ कार्यक्रमकर्ता स्वयं को संवेदनशील बताकर भी पीड़ित व्यक्ति की गरिमा की रक्षा नहीं करते। वे उसकी वेदना को प्रसारण की सामग्री बना देते हैं और दर्शकों को भी भावुक दृश्य दिखाकर रुलाना चाहते हैं। इस प्रकार सहायता और आत्मीयता की जगह कैमरा, नाटकीयता और कार्यक्रम की प्रभावशीलता प्रधान हो जाती है। कवि इसी दिखावटी करुणा और दूसरों के दुख के व्यावसायिक उपयोग पर व्यंग्य करते हैं।

चरण 3: कवि के व्यंग्य का लक्ष्य पहचानें कवि ऐसे संचार माध्यम की आलोचना करते हैं जिसमें पीड़ित मनुष्य एक स्वतंत्र व्यक्ति के बजाय प्रदर्शन की वस्तु बन जाता है। करुणा का दावा तभी सार्थक होता जब उसकी भावना और सम्मान का ध्यान रखा जाता।

चरण 4: निष्कर्ष यह कविता कार्यक्रमकर्ताओं की संवेदनहीनता प्रकट करती है: वे दिव्यांग व्यक्ति की पीड़ा दूर करने के बजाय उसे कैमरे के सामने उभारकर दर्शकों के लिए प्रभावशाली दृश्य बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रश्नों द्वारा दबाव, आँसू दिखाने की इच्छा और व्यक्ति की गरिमा की उपेक्षा को जोड़ें।

10(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए : भोर के नभ को राख से लीपा चौका क्यों कहा गया है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बिंब किसी दृश्य को परिचित वस्तु के सहारे अनुभव करने योग्य बनाता है।
- शमशेर की कविता में रंग और प्रकाश के बदलते रूपों से भोर का चित्र बनता है।

चरण 1: रंग और वातावरण का साम्य बताएँ सूर्योदय से पहले भोर का आकाश हलका धूसर दिखाई देता है। उसमें रात का गहरापन कम हो चुका होता है, पर सूर्य का तीखा प्रकाश अभी नहीं फैलता। राख से लीपे चौके का मटमैला, धूसर रंग इसी समय के नभ से मिलता है। इसलिए कवि ने आकाश को राख से लीपा हुआ चौका कहा है।

चरण 2: गीले चौके के बिंब का प्रभाव स्पष्ट करें कवि चौके को अभी गीला भी बताते हैं। इस संकेत से प्रातःकाल की नमी, ताजगी और शांत वातावरण का अनुभव होता है। गाँव के घर का स्वच्छ किया हुआ चौका पाठक की परिचित वस्तु है; उसके सहारे दूर का आकाश निकट और सजीव हो उठता है। आगे बदलते रंगों के साथ यह बिंब उषा की धीरे-धीरे खुलती सुंदरता का एक पड़ाव बनता है।

चरण 3: बिंब की सजीवता समझें चौका प्रतिदिन के घरेलू जीवन से जुड़ा है और राख से लीपने पर उसकी सतह धूसर तथा एकसार दिखाई देती है। कवि इसी परिचित दृश्य से भोर के आकाश का सूक्ष्म रंग समझाते हैं। इसमें चमकदार दोपहर का उजाला नहीं, बल्कि सूरज निकलने से पहले का मद्धिम प्रकाश है। गीलापन जोड़ने से दृश्य केवल रंग का चित्र नहीं रहता; उसमें ठंडक और स्वच्छता का अनुभव भी मिलता है।

चरण 4: निष्कर्ष भोर के नभ का धूसर रंग राख से लीपे चौके जैसा और उसकी ताजगी गीले चौके जैसी है। इस रंग-साम्य तथा नमी के कारण कवि ने यह सजीव घरेलू बिंब चुना है।

त्वरित सुझाव: राख से धूसर रंग और गीले चौके से प्रातःकाल की नमी तथा ताजगी का संबंध अलग-अलग बताएँ।

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इस दंड विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति, उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं; पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई। वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था। इसके अतिरिक्त परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम में सच्ची पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा होगा, क्योंकि उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगौझा करके सबको अँगूठा दिखा दिया। काम वही करती थी, इसलिए गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में उसी का ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था। [8 अंक]

11(क). खोटे सिक्के की टकसाल किसे कहा गया है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त रूपक का अर्थ उसके सामाजिक संदर्भ और पात्र की स्थिति से स्पष्ट होता है।
- बेटियों को कमतर मानने वाली सोच पात्र के गुणों का सही मूल्यांकन नहीं करती।

चरण 1: संबोधन का पात्र पहचानें खोटे सिक्कों की टकसाल भक्तिन अर्थात लछमिन को कहा गया है। यहाँ टकसाल का अर्थ सिक्के बनाने की जगह है। इस रूपक के माध्यम से बेटियाँ जन्म देने वाली स्त्री के प्रति परिवार की तिरस्कारपूर्ण दृष्टि सामने आती है।

चरण 2: संबोधन के पीछे की सोच बताएँ लछमिन ने बेटियों को जन्म दिया था। पुत्र को अधिक महत्त्व देने वाला परिवार बेटियों को खोटे सिक्के मानता था और उनकी माँ को ऐसी टकसाल कहकर नीचा दिखाता था। यह संबोधन लछमिन की वास्तविक योग्यता का प्रमाण नहीं है; उसी गद्यांश में उसका परिश्रम, तेज और पति के प्रति निष्ठा उभरती है।

चरण 3: निष्कर्ष बेटियों को जन्म देने के कारण लछमिन को खोटे सिक्कों की टकसाल कहा गया है। यह कथन बेटियों के प्रति परिवार की भेदभावपूर्ण मानसिकता व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: टकसाल का शाब्दिक अर्थ बताने के बाद बेटियों को खोटा मानने वाली सामाजिक सोच स्पष्ट करें।

11(ख). लछमिन को ग्रामीण जीवन का अधिक ज्ञान क्यों था? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पात्र के ज्ञान का कारण उसके दैनिक श्रम और प्रत्यक्ष अनुभव में खोजा जाता है।
- गद्यांश का अंतिम वाक्य ग्रामीण संसाधनों के विषय में लछमिन के अधिक ज्ञान का आधार देता है।

चरण 1: दैनिक काम से संबंध स्थापित करें लछमिन घर और खेती से जुड़े काम स्वयं करती थी। गाय-भैंस की देखभाल, खेत-खलिहान तथा अमराई के पेड़ों से उसका प्रत्यक्ष संबंध था। इन कामों में निरंतर लगे रहने के कारण उसे उनकी जरूरतों, उपयोग और व्यवस्था का व्यावहारिक अनुभव मिला था।

चरण 2: ज्ञान के बढ़ने का कारण बताएँ गद्यांश में स्पष्ट है कि काम वही करती थी, इसलिए इन विषयों में उसका ज्ञान अधिक था। उसका ज्ञान केवल सुनी हुई बातों पर आधारित नहीं था; श्रम करते समय मिलने वाला अनुभव उसे ग्रामीण जीवन की बारीकियाँ समझाता था। इसी कारण ग्रामीण संपत्ति और संसाधनों के विषय में उसकी जानकारी बढ़ी-चढ़ी थी।

चरण 3: निष्कर्ष लछमिन को ग्रामीण जीवन का अधिक ज्ञान इसलिए था कि गाय-भैंस, खेत-खलिहान और अमराई से संबंधित काम वही करती थी। उसके लगातार श्रम और प्रत्यक्ष अनुभव ने उसे जानकार बनाया था।

त्वरित सुझाव: कारण में केवल ग्रामीण निवास न लिखें; गाय-भैंस, खेती और अमराई का काम स्वयं करने का उल्लेख करें।

11(ग). किन गुणों के कारण पत्नी पति की प्रेम पात्र थी? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र के गुणों को गद्यांश के स्पष्ट संकेतों के आधार पर पहचानना चाहिए।
- पति का व्यवहार और पत्नी के गुण मिलकर उनके आपसी प्रेम तथा विश्वास को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: पत्नी के प्रमुख गुण पहचानें लछमिन परिश्रमी और तेजस्विनी थी। वह घर तथा खेती के कामों की जिम्मेदारी संभालती थी और अपने स्वाभिमान की रक्षा करना जानती थी। गद्यांश में उसे बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी कहा गया है; उसका पति उसकी इस दृढ़ता और व्यक्तित्व को पहचानता था।

चरण 2: निष्ठा और प्रेम का संबंध स्पष्ट करें पति के प्रति वह रोम-रोम में सच्ची थी, अर्थात उसकी निष्ठा पूर्ण और गहरी थी। इसी परिश्रम, तेजस्विता और सच्चे लगाव के कारण पति उसे बहुत चाहता था। परिवार की चुगली-चबाई भी उसे पत्नी से दूर नहीं कर सकी; उलटे पत्नी के प्रति उसका प्रेम बढ़ता था। इस प्रकार संबंध का आधार उसके गुणों के प्रति सम्मान और विश्वास था।

चरण 3: निष्कर्ष परिश्रम, तेजस्विता, स्वाभिमान और पति के प्रति अटूट निष्ठा के कारण लछमिन पति की प्रेमपात्र थी। वह उसके व्यक्तित्व और सच्चे लगाव को पहचानता तथा सम्मान देता था।

त्वरित सुझाव: गुण गिनाने के साथ गद्यांश का रोम-रोम में सच्ची होने वाला संकेत जोड़कर निष्ठा स्पष्ट करें।

11(घ). अलगौझा किसे कहते हैं? लछमिन ने अलगौझा क्यों करवा लिया? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अलगौझा का अर्थ संयुक्त परिवार से अलग होकर अपनी स्वतंत्र गृहस्थी स्थापित करना है।
- लछमिन के निर्णय को उसके परिश्रम, पारिवारिक व्यवहार और पति के समर्थन के संदर्भ में समझना चाहिए।

चरण 1: अलगौझा का अर्थ अलगौझा संयुक्त परिवार में रहने वाले सदस्यों के बीच संपत्ति और कामकाज का बँटवारा करके अलग रहने की व्यवस्था को कहते हैं। इसमें परिवार की साझा गृहस्थी से अलग अपनी गृहस्थी चलाई जाती है।

चरण 2: अलग होने का कारण लछमिन घर और खेती का कठिन परिश्रम स्वयं करती थी, पर उसे तथा उसकी बेटियों को जिठानियों की उपेक्षा और भेदभाव सहना पड़ता था। अपनी मेहनत के बावजूद दूसरों पर आश्रित रहना उसके स्वाभिमान के विरुद्ध था। पति का प्रेम और विश्वास उसे प्राप्त था; उसी के बल पर उसने अलगौझा करवाकर स्वतंत्र गृहस्थी स्थापित की। गाय-भैंस, खेत-खलिहान और पेड़ों के विषय में उसका व्यावहारिक ज्ञान इस निर्णय का सहारा बना।

चरण 3: निष्कर्ष अलगौझा परिवार की साझी गृहस्थी से अलग होना है। लछमिन ने उपेक्षा और भेदभाव से मुक्ति तथा अपने परिश्रम के आधार पर सम्मानपूर्वक स्वतंत्र जीवन जीने के लिए इसे करवाया।

त्वरित सुझाव: पहले शब्द का अर्थ लिखें, फिर लछमिन की स्थिति और पति के समर्थन से उसका कारण जोड़ें।

12(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : बाज़ार का जादू क्या है? इस जादू से बचने का सर्वोत्तम उपाय क्या है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का आकर्षण वस्तुओं की सजावट और प्रदर्शन से मनुष्य की इच्छाओं को बढ़ाता है।

- निश्चित आवश्यकता का ज्ञान अनावश्यक खरीदारी से बचने का आधार है।

चरण 1: बाज़ार के जादू का स्वरूप बाज़ार का जादू उसकी चकाचौंध, आकर्षक ढंग से सजाई गई वस्तुओं और उनकी विविधता का सम्मोहन है। यह मनुष्य को ऐसी चीज़ें खरीदने के लिए भी उकसाता है जिनकी उसे वास्तविक आवश्यकता नहीं होती। सब कुछ अपने लिए उपयोगी और वांछनीय दिखाई देने लगता है; फलतः अभाव का अनुभव और अधिक पाने की लालसा बढ़ती जाती है।

चरण 2: जादू से बचने का सर्वोत्तम उपाय इससे बचने का सर्वोत्तम उपाय है कि बाज़ार जाने से पहले अपनी वास्तविक आवश्यकताओं को स्पष्ट कर लिया जाए। लेखक का आशय है कि मन खाली न हो, बल्कि उसमें यह निश्चित रहे कि हमें क्या खरीदना है। तब आकर्षक वस्तुएँ हमारा निर्णय नहीं बदल पातीं। भगत जी की तरह अपनी ज़रूरत भर लेकर संतुष्ट रहने वाला व्यक्ति बाज़ार की उपयोगिता ग्रहण करता है और उसके सम्मोहन से बचा रहता है। मन में आवश्यकता का निश्चय होने से चयन सरल हो जाता है और खर्च भी सार्थक रहता है। वस्तुओं का आकर्षण हमें अपनी आर्थिक सीमा भूलने के लिए बाध्य नहीं कर पाता। केवल जेब खाली होना बचाव नहीं है; निर्णायक बात मन का संयम और आवश्यकता की पहचान है।

चरण 3: निष्कर्ष बाज़ार का जादू अनावश्यक वस्तुओं के प्रति पैदा होने वाला आकर्षण है। अपनी ज़रूरत निश्चित करके और उसी तक खरीदारी सीमित रखकर इससे बचा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में आकर्षक प्रदर्शन, अनावश्यक इच्छा और निश्चित आवश्यकता के तीन सूत्र क्रम से जोड़ें।

12(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : शिरीष की तुलना अवधूत से क्यों की गई है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवधूत संसार के सुख-दुःख से अनासक्त रहकर सहज और मस्त जीवन जीता है।
- शिरीष की जीवनशक्ति और प्रतिकूल मौसम में खिलना इसी स्वभाव का प्रतीक है।

चरण 1: अवधूत के स्वभाव को समझना अवधूत बाहरी परिस्थितियों से विचलित हुए बिना अपने स्वभाव में स्थित रहता है। वह सुख-सुविधाओं के आकर्षण तथा कठिनाइयों के भय से ऊपर उठकर अनासक्त भाव से जीवन जीता है। उसकी मस्ती और सहजता परिस्थितियों की कृपा पर निर्भर नहीं होती।

चरण 2: शिरीष में उसी स्वभाव की पहचान शिरीष भी भीषण गर्मी, लू और उमस में हरा-भरा रहकर कोमल फूलों से लदा रहता है। जब दूसरे वृक्ष प्रतिकूल मौसम से प्रभावित दिखाई देते हैं, तब वह मानो अपनी ही मस्ती में खिलता है। लेखक के अनुसार वह वायुमंडल से अपना रस खींचकर जीवन धारण करता है। उसकी यह जीवनशक्ति, सहनशीलता और बाहरी कठिनाइयों के प्रति अनासक्ति अवधूत की याद दिलाती है। वह केवल कठोर बनकर नहीं टिकता, बल्कि कोमलता, सौंदर्य और उल्लास भी बनाए रखता है। इसी कारण उसके माध्यम से कठिन परिस्थितियों में भी सरस और निर्लिप्त बने रहने का संदेश मिलता है। शिरीष की मस्ती पलायन नहीं, जीवन के बीच रहकर अभाव और ताप को सहने की शक्ति है। उसकी तुलना का आधार यही आंतरिक स्वतंत्रता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रचंड गर्मी में भी मस्त होकर खिलने, प्रतिकूलता से अविचल रहने और अनासक्त भाव से जीवन का रस ग्रहण करने के कारण शिरीष की तुलना अवधूत से की गई है।

त्वरित सुझाव: तुलना लिखते समय अवधूत के हर गुण के साथ शिरीष की कोई ठोस विशेषता अवश्य जोड़ें।

12(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 'काले मेघा पानी दे' पाठ में भारतीय समाज की किस दुविधा तथा आडंबर को व्यक्त किया गया है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में वर्षा से जुड़े लोकाचारों के माध्यम से आस्था और तर्क के बीच द्वंद्व सामने आता है।
- इंदर सेना पर पानी डालने की प्रथा को लेखक और जीजी अलग दृष्टियों से देखते हैं।

चरण 1: समाज की दुविधा भारतीय समाज की दुविधा यह है कि वह परंपरागत आस्था और आधुनिक तर्कबुद्धि के बीच झूलता है। लेखक सूखे के समय इंदर सेना के लड़कों पर पानी डालना व्यर्थ समझता है। जब लोग पानी की कमी से जूझ रहे हों, तब उपलब्ध पानी इस प्रकार बहाना उसे समझदारी नहीं लगता। दूसरी ओर जीजी इसे वर्षा के लिए किया गया त्याग और लोकमंगल की भावना मानती हैं। उनके लिए पहले कुछ देने पर ही अधिक पाने की आशा सार्थक होती है।

चरण 2: आडंबर और उसके पीछे की भावना वर्षा कराने के लिए इंदर सेना का घूमना, पानी माँगना और उस पर पानी उँड़ेलना ऐसी बाहरी क्रिया है जिसका वर्षा से वैज्ञानिक संबंध प्रमाणित नहीं है। लेखक की तर्कशील दृष्टि को इसी में अंधविश्वास और आडंबर दिखाई देता है। फिर भी पाठ लोकपरंपरा को केवल उपहास का विषय नहीं बनाता; जीजी उसमें दान, सामूहिक आशा और त्याग का मूल्य देखती हैं। इस प्रकार समाज एक ओर कर्मकांड में समाधान खोजता है, दूसरी ओर तर्क से उसकी उपयोगिता पर प्रश्न भी उठाता है।

चरण 3: निष्कर्ष पाठ भारतीय समाज के आस्था और तर्क के बीच द्वंद्व को व्यक्त करता है। सूखे में पानी बहाकर वर्षा बुलाने का कर्मकांड आडंबर प्रतीत होता है, जबकि जीजी उसमें त्याग और लोककल्याण का विश्वास देखती हैं।

त्वरित सुझाव: लेखक की पानी बचाने की दलील और जीजी की त्याग की भावना दोनों लिखें; तभी दुविधा स्पष्ट होगी।

12(घ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : कहानी के अनुसार नमक ले जाने के सम्बन्ध में क्या दुविधा थी और क्यों? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में नमक स्मृति, अपनत्व और जन्मभूमि के लगाव का प्रतीक है।
- सीमा का कानून और सिख बीबी की भावनाओं का सम्मान सफ़िया के सामने परस्पर विरोधी दायित्व बनते हैं।

चरण 1: नमक ले जाने की इच्छा सिख बीबी अपनी जन्मभूमि लाहौर को भूल नहीं पाई थीं। उन्होंने सफ़िया से लाहौरी नमक लाने को कहा था। उनके लिए वह साधारण खाद्य पदार्थ नहीं, अपने वतन की याद और आत्मीयता का प्रतीक था। सफ़िया इस छोटी-सी इच्छा को पूरा करके उनकी भावना का सम्मान करना चाहती थी। इसलिए उसने नमक ले जाने का निश्चय किया।

चरण 2: दुविधा का कारण दुविधा यह थी कि पाकिस्तान से भारत नमक ले जाना सीमा-शुल्क संबंधी नियमों के विरुद्ध था। अब सफ़िया के सामने प्रश्न था कि नमक छिपाकर ले जाए या अधिकारियों को साफ़-साफ़ बता दे। छिपाने पर वह चोरी जैसा अनुचित काम करती और पकड़े जाने का भय भी रहता; सच बताने पर नमक रोक लिए जाने तथा सिख बीबी की इच्छा अधूरी रह जाने की आशंका थी। एक ओर सरकारी प्रतिबंध था, दूसरी ओर मानवीय अपनत्व और जन्मभूमि से जुड़ी भावना। राजनीतिक सीमाएँ इन आत्मीय भावनाओं को रोक नहीं सकतीं। यही टकराव नमक जैसी मामूली वस्तु को उसके लिए गंभीर नैतिक दुविधा बना देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सफ़िया की दुविधा थी कि प्रतिबंधित नमक छिपाकर सीमा पार ले जाए या सच बताकर उसके रोक लिए जाने का जोखिम उठाए। नियम और सिख बीबी के वतन-प्रेम का सम्मान उसके सामने टकरा रहे थे।

त्वरित सुझाव: नमक के भावनात्मक महत्त्व के बाद कानूनी रोक और छिपाने या बताने की दुविधा स्पष्ट करें।

12(ङ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : चार्ली चैप्लिन का भारतीयकरण किन-किन रूपों में पाया जाता है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली का हास्य साधारण आदमी की गरीबी, असफलता और अपमान को करुणा के साथ प्रस्तुत करता है।
- भारतीयकरण का अर्थ भारतीय फिल्मों में चार्ली की अभिनय-पद्धति और मानवीय दृष्टि को स्थानीय जीवन के अनुकूल अपनाना है।

चरण 1: भारतीय सिनेमा में चार्ली की परंपरा चार्ली चैप्लिन का भारतीयकरण मुख्यतः भारतीय फिल्मों के ऐसे नायकों में दिखाई देता है जो साधारण, अभावग्रस्त और भोले होते हैं। वे समाज की कठोरता से चोट खाते हैं, फिर भी अपनी मनुष्यता और आशा नहीं छोड़ते। उनकी दयनीय दशा दर्शक को केवल रुलाती नहीं, बल्कि उनके व्यवहार से हँसी भी पैदा होती है। इस प्रकार हँसी और करुणा का मेल चार्ली से भारतीय सिनेमा तक आता है।

चरण 2: राज कपूर के माध्यम से रूपांतरण राज कपूर ने चार्ली की परंपरा को विशेष रूप से भारतीय रूप दिया। उनकी आवारा और श्री 420 जैसी फिल्मों में गरीब, भोले, भटकते हुए व्यक्ति का चरित्र दिखाई देता है। पहनावे, हावभाव, चाल और संकट में भी हास्य पैदा करने की शैली में चार्ली का प्रभाव है; किंतु कथा और सामाजिक परिवेश भारतीय हैं। यह केवल बाहरी नकल नहीं, भारतीय गरीब आदमी के संघर्ष में उस चरित्र का पुनर्सृजन है।

चरण 3: व्यापक भारतीय स्वीकृति अपने ऊपर हँसने और दुख के बीच भी जीने की शक्ति भारतीय दर्शकों को चार्ली से जोड़ती है। इसलिए चार्ली की परंपरा हास्य-अभिनय तक सीमित नहीं रहती; वह आम आदमी की विवशता, संवेदना और जीवट को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनती है। यही उसके भारतीयकरण का मूल भाव है।

चरण 4: निष्कर्ष चार्ली का भारतीयकरण राज कपूर जैसे कलाकारों के अभिनय, गरीब और भोले नायक की छवि तथा भारतीय जीवन के दुखों में हास्य और करुणा के मेल के रूप में मिलता है।

त्वरित सुझाव: भारतीयकरण समझाते समय राज कपूर का उदाहरण देकर बाहरी अभिनय और भीतरी मानवीय संवेदना, दोनों स्पष्ट करें।

---

13. आपके विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक तथा दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? जीवन-मूल्यों के संदर्भ में तर्क सहित उत्तर दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जूझ में शिक्षा की आकांक्षा और पारिवारिक आर्थिक दबाव के बीच संघर्ष सामने आता है।
- परिश्रम, आत्मसम्मान, अवसर की समानता और व्यक्ति के विकास की कसौटी पर विभिन्न रवैयों का मूल्यांकन करना चाहिए।

चरण 1: लेखक और दत्ता जी राव के पक्ष का आधार मेरे विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था। लेखक समझता था कि केवल खेती के काम में लगे रहने से उसके जीवन की कठिनाइयाँ समाप्त नहीं होंगी। शिक्षा उसे समझ, योग्यता और आगे बढ़ने का अवसर दे सकती है। पढ़ने की उसकी इच्छा काम से बचने की चाल नहीं, अपना भविष्य बनाने का संकल्प थी। यही आकांक्षा उसे कठिन परिस्थितियों में भी संघर्ष करने की शक्ति देती है।

चरण 2: पिता की दृष्टि का मूल्यांकन लेखक के पिता चाहते थे कि वह खेती में लगा रहे। परिवार की आजीविका की चिंता अपनी जगह समझ में आती है, किंतु बच्चे की पढ़ाई बंद कर देना उसका उचित समाधान नहीं था। पिता की दृष्टि तत्काल मिलने वाली श्रम-सहायता तक सीमित थी। इससे लेखक की प्रतिभा और भविष्य की संभावनाएँ दब रही थीं। संतान को केवल खेत के काम में सहायक मानना उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व और विकास के अधिकार की उपेक्षा है।

चरण 3: दत्ता जी राव का सहयोग और लेखक का श्रम दत्ता जी राव ने लेखक की इच्छा को महत्त्व दिया और उसके पिता को उसे विद्यालय भेजने के लिए तैयार किया। उनका सहयोग उस बच्चे की क्षमता पर विश्वास और शिक्षा के प्रति सामाजिक जिम्मेदारी का परिचायक है। दूसरी ओर लेखक ने विद्यालय जाने के साथ खेती और घर के काम की जिम्मेदारी भी उठाई। वह परिश्रम से भागता नहीं

था; कठिन दिनचर्या के बीच पढ़ने का समय निकालता था। इससे स्पष्ट है कि उसके लिए शिक्षा और कर्तव्य दोनों महत्त्वपूर्ण थे।

चरण 4: जीवन-मूल्यों पर अंतिम निर्णय शिक्षा आत्मनिर्भरता, विवेक और आत्मसम्मान का आधार बनती है। आर्थिक कठिनाई के कारण बच्चे की संभावनाओं को सदा के लिए रोक देना उचित नहीं है। परिवार के प्रति कर्तव्य निभाते हुए शिक्षा का अवसर मिलना चाहिए। लेखक की लगन और दत्ता जी राव का प्रोत्साहन इसी संतुलित और मानवीय दृष्टि को व्यक्त करते हैं। इसलिए उनका रवैया अधिक दूरदर्शी और जीवन-मूल्यों के अनुकूल था।

चरण 5: निष्कर्ष लेखक और दत्ता जी राव का पक्ष उचित था, क्योंकि वह परिश्रम और पारिवारिक जिम्मेदारी के साथ शिक्षा, आत्मसम्मान तथा भविष्य के विकास को महत्त्व देता है।

त्वरित सुझाव: पिता की आर्थिक चिंता स्वीकार करके भी शिक्षा रोकने की सीमा दिखाएँ और अपने निर्णय को लेखक के श्रम से पुष्ट करें।

14(क). यशोधर बाबू के जीवन को दिशा देने में किसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी? कैसे? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सिल्वर वैडिंग में यशोधर बाबू के व्यक्तित्व पर किशन दा के संस्कारों और जीवन-दृष्टि का गहरा प्रभाव है।
- किसी पात्र के प्रभाव को उसके व्यवहार, मूल्यों तथा जीवन के निर्णयों में दिखाई देने वाले अनुकरण से स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: मार्गदर्शक व्यक्ति की पहचान यशोधर बाबू के जीवन को दिशा देने में किशन दा की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। जब यशोधर बाबू युवावस्था में दिल्ली आए, तब किशन दा ने उन्हें सहारा और अपनापन दिया। नए शहर में जीवन सँभालने और नौकरी के क्षेत्र में आगे बढ़ने में उनका मार्गदर्शन उपयोगी हुआ। इस कारण यशोधर बाबू उन्हें केवल परिचित बुजुर्ग नहीं, अपने संरक्षक और आदर्श के रूप में देखते थे।

चरण 2: सादगी और सामाजिकता के संस्कार किशन दा सरल, आत्मीय और दूसरों की सहायता करने वाले व्यक्ति थे। पहाड़ से आने वाले लोगों को आश्रय और सहयोग देना उनके स्वभाव का अंग था। उनके यहाँ मिलने-जुलने वालों के लिए अपनापन था। यशोधर बाबू ने उनसे सीखा कि मनुष्य का महत्त्व केवल धन और व्यक्तिगत सुविधा में नहीं, बल्कि दूसरों के काम आने में है। इसलिए उनके व्यवहार में सामुदायिक संबंधों और पुरानी आत्मीय परंपराओं का विशेष स्थान दिखाई देता है।

चरण 3: जीवन-दृष्टि और व्यवहार पर प्रभाव यशोधर बाबू बहुत-सी परिस्थितियों को किशन दा की दृष्टि से देखते और उनके व्यवहार को याद करते हैं। जीवन की असंगतियों को कुछ दूरी से देखने की किशन दा की शैली भी उन्हें प्रभावित करती है। वे बदलते समय की चकाचौंध और प्रदर्शन को सहज स्वीकार नहीं कर पाते, क्योंकि उनके मन में सादगी और संयम का वही आदर्श बसा है। परिवार के नए तौर-तरीकों के सामने उनकी असहजता को समझने में किशन दा के संस्कार महत्त्वपूर्ण हैं।

चरण 4: आदर्श के साथ जुड़ी चिंता किशन दा की स्मृति यशोधर बाबू के लिए प्रेरणा के साथ चिंता का कारण भी है। अविवाहित किशन दा के जीवन का अकेलापन और उनका अंतिम समय उन्हें सोचने पर मजबूर करता है। वे उनके आदर्शों से जुड़े रहते हैं, पर अपने बुढ़ापे और परिवार से संबंधों को लेकर भी संवेदनशील हो उठते हैं। इस प्रकार किशन दा का प्रभाव केवल पुरानी बातों की याद नहीं, यशोधर बाबू के वर्तमान विचारों और आत्ममंथन का आधार है।

चरण 5: निष्कर्ष किशन दा यशोधर बाबू के संरक्षक और जीवन-आदर्श थे। उनके सहयोग, सादगी, परोपकार और सामाजिक आत्मीयता ने यशोधर बाबू के व्यक्तित्व तथा जीवन-दृष्टि को दिशा दी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में किशन दा का नाम बताने के बाद संरक्षण, सादगी, सामाजिक सहयोग और यशोधर बाबू की चिंतन-शैली से उनका संबंध जोड़ें।

14(ख). "टूटे-फूटे खंडहर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुये पहलुओं के जीवंत दस्तावेज भी होते हैं।" कैसे? 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ओम थानवी का यात्रा-वृत्तांत 'अतीत में दबे पाँव' मोहनजोदड़ो के पुरातात्त्विक अवशेषों में प्राचीन नगरवासियों के जीवन की झलक खोजता है। खंडहर इतिहास के प्रमाण होने के साथ मानवीय अनुभवों के संकेत भी हैं।
- नगर की योजना, घर, स्नानागार और मिली हुई वस्तुओं से वहाँ के लोगों की दिनचर्या, रुचि, सामाजिक व्यवस्था और संस्कृति का अनुमान मिलता है। ये निष्कर्ष अवशेषों पर आधारित होने चाहिए, कल्पित घटनाओं पर नहीं।

चरण 1: नगर-योजना में सामाजिक जीवन के संकेत मोहनजोदड़ो की सुव्यवस्थित सड़कें, गलियाँ, जल-निकासी और घर बताते हैं कि वहाँ के लोग सामूहिक सुविधाओं तथा स्वच्छता का ध्यान रखते थे। पकी ईंटों का उपयोग और योजनाबद्ध निर्माण उनके तकनीकी ज्ञान तथा विकसित नागरिक जीवन के प्रमाण हैं। इस प्रकार खंडहर केवल किसी सभ्यता की प्राचीनता नहीं बताते; वे उन लोगों की जीवन-व्यवस्था भी सामने लाते हैं जो कभी इन मार्गों पर चलते थे।

चरण 2: घरों और स्नानागार में धड़कती दिनचर्या घरों के आँगन, कमरे, कुएँ और स्नान की व्यवस्था से निजी तथा पारिवारिक जीवन की झलक मिलती है। विशाल स्नानागार सामूहिक जीवन और जल-प्रबंधन की विकसित समझ की ओर संकेत करता है। लेखक इन स्थानों को देखते हुए बीते समय में रहने वाले मनुष्यों की उपस्थिति अनुभव करता है। आज सूने दिखने वाले स्थान कभी घरेलू कामकाज, आवाजाही और सामाजिक संपर्क के केंद्र रहे होंगे। यही अनुभूति निर्जीव ईंटों को जीवन का दस्तावेज बना देती है।

चरण 3: छोटी वस्तुओं में साधारण लोगों की दुनिया खुदाई में मिले मृद्भांड, औजार, मुहरें, आभूषण, खिलौने और मूर्तियाँ जीवन के उन पक्षों का परिचय देती हैं जिन्हें राजाओं और युद्धों का इतिहास प्रायः नहीं समेटता। बर्तनों में घरेलू जरूरतें, औजारों में श्रम और हुनर, आभूषणों में सौंदर्यबोध तथा खिलौनों में बच्चों की दुनिया की झलक मिलती है। नर्तकी की कांस्य प्रतिमा कलात्मक कौशल और देह की सहज अभिव्यक्ति का प्रमाण है। इन वस्तुओं के सहारे हम नगरवासियों की रुचियों और रोजमर्रा के जीवन से जुड़ पाते हैं।

चरण 4: पाठ के केंद्रीय विचार से संबंध लेखक के लिए सिंधु सभ्यता का आकर्षण उसकी भव्यता से अधिक उसकी समझ और सुघड़ता में है। उपलब्ध अवशेषों में विशाल राजमहलों या राजकीय प्रभुत्व की तुलना में नगर और सामान्य नागरिकों के जीवन की छाप अधिक दिखाई देती है। अतः खंडहरों का महत्त्व भवनों की नाप-जोख तक सीमित नहीं है। वे उन अनाम लोगों के श्रम, कला, सामूहिक बोध और जीवन के प्रति लगाव को भी सुरक्षित रखते हैं जिनके व्यक्तिगत नाम इतिहास में नहीं मिलते।

चरण 5: निष्कर्ष इस प्रकार मोहनजोदड़ो के टूटे-फूटे खंडहर सभ्यता के विकास का ऐतिहासिक साक्ष्य देने के साथ साधारण मनुष्यों के रहन-सहन, श्रम, रुचियों और सामाजिक संबंधों की जीवंत झलक भी प्रस्तुत करते हैं। 'अतीत में दबे पाँव' इन्हीं अवशेषों के माध्यम से अतीत की धड़कती जिंदगी से हमारा संबंध जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नगर-योजना, घरेलू सुविधाओं और छोटी पुरावस्तुओं के उदाहरण देकर प्रत्येक को मनुष्य के जीवन के किसी पक्ष से जोड़िए।